अंक 1 व 2

1997

चैतन्य लहरी

"सहजयोग का सबसे बड़ा लाभ यह है कि समाधान, कि इससे आगे अब कुछ नहीं चाहिए। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। मैं सब पा चुका हूँ। यह जब स्थिति आपकी आ जाएगी, तब समझना कि आप सहज में उतर गए। और फिर अनायास, आप कुछ चाहें या न चाहें, सहज आपकी देखभाल करेगा। आपको सर्वदा, पूर्णतया सन्तुष्ट कर देगा।"

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
शक्ति पूजा, दिल्ली

चैतन्य लहरी
विषय सूची

खण्ड IX, अंक 1 व 2, 1997

1) जन्मोत्सव पर हृदयाभिव्यक्ति..... 3

2) वरदा मां..... 5

3) आकांक्षा 5

4) धन्यवाद श्री माता जी..... 6

5) व्यापारियों से वार्ता, दिल्ली, 5.4.1996 11

6) श्री आदिशक्ति पूजा, कबेला, 9.6.1996 17

7) श्री माता जी की सहजयोगियों से बातचीत–1.3.1992 28

8) लोगों को प्रभावित कैसे करें श्री माता जी– 17.9.1986 39

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस प्रकाशन का कोई भी अंश, प्रकाशक की अनुमति लिए बिना, किसी भी रूप में अथवा किसी भी जरिये से कहीं उद्धृत अथवा सम्प्रेषित न किया जाए। जो भी व्यक्ति इस प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनधिकृत कार्य करेगा उसके विरुद्ध दंडात्मक अभियोजन तथा क्षतिपूर्ति के लिए दीवानी दावा दायर किया जा सकता है।

प्रकाशक :
निर्मल ट्रान्सफॉर्मेशन प्राइवेट लिमिटेड,
8, चंद्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,
कोथरुड, पौढ़ रोड, पुणे 411038
'ई' मेल का पता–
marketing@nirmalinfosys.com
वेबसाइट: www.nirmalinfosys.com
Tel. 9120 25286537. Fax. 9120 25286722

जन्मोत्सव पर हृदयाभिव्यक्ति

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के 71 वें जन्मोत्सव के शुभावसर पर फिलिप जेस की हृदयाभिव्यक्ति

इस अवसर पर मैं हम सभी को याद करवाना चाहता हूँ कि इस क्षण यूरोप के अधिकतर सहजयोगी श्री माता जी का जन्म दिन मनाने के लिए युगोस्लाविया में एक बड़े सेमिनार में एकत्रित हुए होंगे और आपकी आज्ञा से जन्मोत्सव के इस अवसर पर मैं उनकी तीव्र इच्छा को आपके सम्मुख रखना चाहूंगा कि कृपा करके युगोस्लाविया में युद्ध, सारी राक्षसी प्रवृत्तियां, सारी नकारात्मकता तथा विश्व भर के सारे युद्धों को समाप्त कर दें।

श्री माताजी आप का स्वभाव तिहरा है और आपसे हमारे सम्बन्ध भी तिहरे हैं, अर्थात् **हम देवी रूप में आपकी पूजा करते हैं, गुरु रूप में आपके प्रति समर्पित होते हैं और माँ रूप में आपको प्रेम करते हैं।** आपके इस तिहरे स्वभाव और आपसे हमारे तिहरे सम्बन्धों के कारण मैं तीन प्रकार से आपके प्रति अपनी **कृतज्ञता प्रकट करना चाहूँगा।** श्री माताजी सम्मानमय संकोच तथा एक ओर अत्यंत भय की तथा दूसरी ओर अत्यन्त श्रद्धा की भावना के साथ हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी कृतज्ञता को स्वीकार करें, कि हे **देवी आदिशक्ति! आप अवतरित हुईं, कलयुग के अन्त में आपका अवतरण पृथ्वी तथा मानव जाति के उद्धार के लिए है। निःसन्देह सहस्रार भेदन को मानव विकास की महानतम घटना के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा। हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारे अन्दर के देवत्व को जागृत किया। आपने हमारे जीवन को अर्थ प्रदान किया, सृष्टि को अर्थ प्रदान किया और हमारे लिए आपने अपने साम्राज्य, परमात्मा के साम्राज्य, के द्वार खोल दिए। धर्मपराणयता और मूल्य विहीन पश्चिमी समाज का एक सदस्य होते हुए भी , गुरुमयी श्री माताजी, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि सभी गुरुओं की माँ के रूप में आपने हममें विवेक जागृत किया, आवश्यक मर्यादाएं प्रदान कीं और पूर्ण मानव बनने के लिए हमें आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन प्रदान किया ताकि हम सारे देशों, सारे राष्ट्रों के समाज में दैवी प्रेम को स्थापित करने के पूर्ण यन्त्र बन पाएं।**

श्री माताजी आपका बालक होने के नाते और आपके सभी बच्चों की ओर से मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। **श्री माताजी आपका अथाह प्रेम, धैर्य, सहन शक्ति हमें वह अन्तरिक्ष**

प्रदान कर रहा है जिसमें हम छोटे–छोटे शिशुओं से बचपन, किशोरावस्था और व्यस्कता की ओर विकसित हो सकते हैं। श्री माताजी जो सुरक्षा आप हमें प्रदान कर रही हैं और जिस प्रेम के बन्धन में आप हमें हर समय रखती हैं उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। परन्तु श्री माताजी, मैं कभी नहीं चाहूंगा कि बड़ा होकर मैं व्यस्क बनूं। मैं सदा शिशु ही बना रहना चाहूंगा ताकि आपकी साड़ी के पल्लू को पकड़कर आपके मातृत्व का आनन्द जीवन के हर क्षण में ले सकूं।

आज के पवित्र दिन, श्री माताजी, हम सभी सहजयोगी अपने आप को, अपने हृदय, अपना समर्पण, अपनी वचनबद्धता, अपने गुण और अपनी प्रतिभा आपके श्री चरणों में अर्पण करते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि विश्व निर्मला धर्म को इस पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए यथाशक्ति कार्य करेंगे। श्री माताजी आपकी आज्ञापालन करने के लिए हम सदा कृतसंकल्प रहेंगे। हम सब इस शुभावसर पर प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में, कालान्तर में, आने वाले युगों में, यह दिन सबसे पवित्र दिन बन जाए और ईसाइयों के लिए यह **ईसा जयन्ती** की तरह से हो जाए, परन्तु सारे राष्ट्र और विश्व की सभी मानव जातियाँ इसे उत्सव के रूप में मनायें।

जय श्री माता जी।..

वरदा माँ

माँ तुम वरदा हो, ममता की पहचान हो,
तुम्हीं हो सागर प्रेम का, वरदान निर्मल स्नेह का,
प्यार तुम्हारा इतना है पावन, जैसे शिव की गंगा।

तेरी ही डाली के फूल हैं हम, सींचा जिन्हें तुमने प्रेम से
जीवन की तपती धूप में, तेरा आंचल प्रेम की छांव है।

तेरी ही उंगली थामकर, पहला कदम मेरा उठा
आदि गुरु आदि ज्ञान हो, करती हो हर पल हमें क्षमा

माँ तुम वरदा हो, ममता की पहचान हो .....

आकांक्षा

प्रेम अपना दो हमें,
करुणा परस्पर जाग जाए।
नम्रता का दान दो,
कटुता न हममें स्थान पाए।

सम्मान भाव से पूर्ण हों हम,
दूसरों को न तुच्छ मानें,
करें कार्य हृदयपूर्वक,
आत्म विश्वास हममें डालें।

पूर्ण संतोष का दान दो माँ,
इच्छा रहे मात्र उत्थान की,
माँ क्षमा का दान दो
समर्थ आपको समझने की हममें नहीं।

दो सूक्ष्म को समझने की संवेदनशीलता
हृदय में सदा आप महसूस हों
हृदय पावन हो हमारा
श्री चरण इसमें विराजें सदा।

(गौरी)

कोटि–कोटि धन्यवाद

इस वर्ष (1996) सहस्रार पूजा के अवसर पर हमारी परमेश्वरी माँ, श्री माता जी निर्मला देवी के प्रति निम्नलिखित 108 आभार प्रकट किए गए। गहन प्रेम एवं शाश्वत कृतज्ञता के वशीभूत होकर इनकी संरचना की गई है और श्री माताजी की पूजा एवं उनसे प्रार्थना के अवसर पर इनका उच्चारण किया जा सकता है। इनके माध्यम से उन भावनाओं की अभिव्यक्ति की जा सकती है जो अभिव्यक्ति से परे हैं:

1) श्री माता जी कलियुग के गहन अन्धकार में प्रकाश लाने के लिए अपने वैकुण्ठ लोक 'माता द्वीप ' से आप पृथ्वी पर अवतरित हुई, **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
2) भ्रम में फंसी आत्मघाती मानव जाति को सहजयोग प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
3) सृष्टि तथा विकास के अर्थ का रहस्योद्घाटन करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
4) मानव जीवन को दिव्य अर्थ प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
5) परमात्मा का वास्तविक अस्तित्व हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
6) मानव शरीर के अन्दर विश्व रूप का प्रतिबिम्ब हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
7) सृष्टि के मूल सार तत्व (Primordial Principles) हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
8) मानव स्वभाव की वास्तविकता को हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
9) सच्चे धर्म का अर्थ हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
10) सहजयोग का दिव्य ज्ञान आपने हमें सिखाया, **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
11) ईसा मसीह द्वारा दिए गए वचन को आपने निभाया, **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
12) हमारे सम्मुख पड़े भ्रम का पर्दाफाश करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
13) अच्छाई और बुराई का वास्तविक अर्थ हमें बताने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
14) हममें माँ कुण्डलिनी को जागृत करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
15) सामूहिक चेतना के आयाम हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**
16) हमें आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

17) हमारे मध्य नाड़ी तंत्र पर चैतन्य चेतना स्थापित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

18) परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति से हमारा पोषण करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

19) अन्तिम निर्णय (Last Judgement) का अर्थ हमारे सम्मुख प्रकट करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

20) आनन्दमयी पूर्वानुभूति की तन्द्रा से जीवन वृक्ष पुनःचेतन करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

21) सभी अवतरणों और पैगम्बरों के कार्य को सम्मान प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

22) सभी सन्तों और जिज्ञासुओं के स्वप्न साकार करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

23) मानव जाति का उद्धार करने के लिए जिन लोगों ने अपने जीवन बलिदान कर दिए उन्हें अर्थ प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

24) हमारे हृदयों में विश्वास एवं निष्ठा पुनः स्थापित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

25) मानवीय दृढ़निश्चय को कौम, धर्म और जाति प्रथा से ऊपर उठाने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

26) स्वतन्त्रता, समानता तथा भाईचारे के विचारों को दिव्य अर्थ प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

27) मानव जाति को एक अनुभव, एक सत्य और एक परमात्मा के चरण–कमलों में जोड़ने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

28) मानव जाति को पूर्णता के क्षेत्र में आमन्त्रित करने के लिए आपका **कोटि–कोटि धन्यवाद।**

29) द्वैत विश्व के भ्रम से हमें मुक्त करने के लिए आपका **कोटि–कोटि धन्यवाद।**

30) मूर्खता, भ्रम एवं अकेलेपन से हमें मुक्ति दिलाने के लिए आपका **कोटि–कोटि धन्यवाद।**

31) भौतिकवादी विश्व की आसुरी शक्तियों का पर्दाफाश करने के लिए आपका **कोटि–कोटि धन्यवाद।**

32) रेखीय दृष्टिकोण की निरर्थकता का पर्दाफाश करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

33) पैतृक राजनीति के भय एवं क्रूरता का पर्दाफाश करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

34) दास बनाने वाले व्यक्तियों, सामाजिक शैलियों तथा बन्धनों का विनाश करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

35) कैथोलिक चर्च की दमघोटू जंजीरों से मानवता को स्वतन्त्र करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

36) इस्लामिक सरकारों की धार्मिक सत्ता के अभिशाप से मानवता को मुक्त करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

37) सभी कुगुरुओं तथा धार्मिक संस्थाओं के असत्य का हमारे सम्मुख पर्दाफाश करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

38) अन्धविश्वास एवं उथले धार्मिक बन्धनों से मानव जाति को मुक्त कराने के लिए आपका **कोटि–कोटि धन्यवाद।**

39) सत्य के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमियों तथा सीमाओं का अनावरण करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

40) पाश्चात्य मूल्य प्रणाली एवं भ्रमों का अनावरण करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

41) परमात्मा से सम्बन्धों से हमारा परिचय करवाने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

42) हमें योग्य समझने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

43) मानवता को मुक्त कराने के कार्यों में हमारा योगदान स्वीकार करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

44) गहन जिज्ञासु को अपने उद्धारक मातृ प्रेम से परिचित करने का आनन्द हमें प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

45) देवी के दरबार में हम सबको आमन्त्रित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

46) परमात्मा का साम्राज्य पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

47) हमारी भेंट प्रार्थनाओं को स्वीकार करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

48) निरन्तर अपने आशीर्वादों की वर्षा हम पर करते रहने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

49) हमारे अन्तस में वैकुंठ द्वार खोलने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

50) हमें योग का वरदान देने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

51) हमारी सृष्टि करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

52) हमारा शुद्धिकरण करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

53) हमें स्वस्थ करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

54) हमें पवित्र करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

55) हमारी आन्तरिक बाधाएं दूर करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

56) हमें परिवर्तित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

57) हमें ज्योतिर्मय करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

58) हमारा पोषण करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

59) हमें उल्लसित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

60) हमारे अंग–संग होने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

61) हमें अपना प्रेम प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

62) हमारी सहायता करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

63) हमारी रक्षा के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

64) हमें क्षमा करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

65) हमें प्रोत्साहित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

66) हमारा मार्गदर्शन करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

67) हमें सौख्य प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

68) हमें परामर्श देने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

69) हमारे दोष दूर करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

70) कभी भी हमारा परित्याग न करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

71) हमारा उद्धार करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

72) हमें संगठित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

73) हमें सीख देने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

74) हमारी चिन्ता करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

75) हमें अपने चरण कमलों में स्थान प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

76) हमारे हृदय खोलने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

77) हमें अपनी गणना में लेने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

78) हम पर विश्वास करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

79) हमारी प्रतीक्षा करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

80) हमें अपने दिव्य शरीर में स्थान प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

81) हमें सामूहिकता प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

82) हमें सौहार्द प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

83) हमें परिवार प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

84) जीवन में हमें पद प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

85) हमें वैभव प्रदान करने के लिए **आप ग कोटि–कोटि धन्यवाद।**

86) हमें आत्मिक सत्ता प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

87) हमें आत्म–सम्मान प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

88) हमें विवेक–सम्मत बनाने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

89) हमें सुमति प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

90) हमें सफलता प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

91) हमें ध्यानावस्था प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

92) हमें आन्तरिक शान्ति प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

93) हमें आन्तरिक आनन्द प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

94) हमें प्रबुद्ध (Enlightened) चित्त प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

95) हमें निर्लिप्सा प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

96) हमें दिव्य शस्त्रों से सज्जित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

97) हमें देवी देवताओं तथा सभी स्वर्गीय शक्तियों की कृपापूर्ण दृष्टि में समर्पित करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

98) हमें अन्य लोगों की हितेच्छा प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

99) हमें अन्य लोगों की सहायता करने की शक्ति प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

100) विश्व निर्मला धर्म फैलाने की प्रसन्नता हमें प्रदान करने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

101) निरन्तर हम पर चित्त रखने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

102) हमारा दर्पण बनने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

103) हमारे प्रति सदय होने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

104) हमारे हृदय में रहने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

105) हमारी गुरु होने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

106) हमारी हितैषी होने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

107) हमारी माँ होने के लिए **आपका कोटि–कोटि धन्यवाद।**

108) सदा सर्वदा **आपको कोटि–कोटि धन्यवाद।**

व्यापारियों से वार्ता

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

दिल्ली 5.4.1996

सत्य को खोजने से पूर्व हम भिन्न सम्भावनाओं पर विचार करते रहते हैं। जिसे हम 'मन' कहते हैं वह वास्तव में हमारा मस्तिष्क नहीं होता। हम सोचते रहते हैं कि हमारा मन क्या कह रहा है परन्तु आप यह जानकर आाश्चर्यचकित होंगे कि यह मन आता कहाँ से है और यह वास्तव में है क्या ! हमारे अन्दर जो मन है वह वास्तव में हमारे द्वारा बनाई गई एक परिस्थिति है। पशुओं में शायद ऐसा न हो परन्तु मानव जब किसी चीज़ को देखता है तो उस पर प्रतिक्रियाशील होता है। उदाहरणार्थ यहाँ बिछे हुए सुन्दर कालीन को हम देखते हैं, यदि यह हमारा अपना हो तो हम चिन्तित हो उठते हैं कि कहीं यह खराब न हो जाए। तब हम इसका बीमा कराने की सोचते हैं, और यदि यह हमारा नहीं है तो हम सोचने लगते हैं कि यह कहाँ से आया, इसका मूल्य क्या है ? यह सब बातें हमारे मस्तिष्क में आती रहती हैं।

छोटे होते हुए जब बच्चा अपनी माँ के साथ होता है तो वह खूब मजे में रहता है। माँ का कुछ और कार्य करना बच्चे को अच्छा नहीं लगता। उसे लगता है कि माँ उसे परेशान कर रही है। इस प्रकार बच्चें में जो प्रतिक्रिया आरम्भ होती है वह शनैः–शनैः विकसित होकर अहम् कहलाती है। माँ जब बच्चे को किसी कार्य को न करने के लिए कहती है तो बच्चे को अच्छा नहीं लगता, फिर भी वह उसकी बात को सुनता है क्योंकि वह माँ है। इस प्रकार बच्चे के बंधनों की रचना होती है। इस प्रकार हमारे अन्दर केवल दो चीज़ें हैं– हम या तो अपने अहम् या अपने बन्धनोंवश कार्य करते हैं। कोई तीसरी चीज़ नहीं है जो हमें यह बता सके कि हम क्या कर रहे हैं, यह ठीक है या गलत, इससे हमें लाभ होगा या नहीं, यह हमें विनाश की ओर ले जा रही है या प्रसिद्धि की ओर। जिस भी तरह से हम प्रतिबन्धित हैं उसी दिशा में हम बढ़ते चले जाते हैं और तब हमारा अहम् भी विकसित हो सकता है। अहम् की किस्म के अनुसार ही हम कार्य करते हैं। हमारे अन्दर वर्तमान इन दोनों गुणों की सृष्टि हमारे द्वारा ही की जाती है। उदाहरण के तौर पर इस घड़ी की लें जिसे हमने बनाया है। अब हम इस घड़ी के गुलाम हो गए हैं। ज्यों ही इन लोगों ने कहा श्री माता जी आपको सात बजे पहुँचना है, मेरे मन में विचार आया कि हम उस जगह से बहुत दूर हैं, वहाँ समय पर नहीं पहुँच पायेंगे। यह विचार मुझे समय से बांधने का प्रयत्न करते हैं। तब एक और चिन्ता हो जाती है कि यह लोग मुझे ऐसा क्यों कह रहे हैं। इस तरह से हम

समय में बंध जाते हैं और इसके दास बन जाते हैं।

कम्प्यूटर के बिना हम दो जमा दो भी नहीं कर सकते। हमें इसे भी ठीक करना आवश्यक है। हममें आदान–प्रदान की भी कमी है और यह मस्तिष्क, जो कि एक वास्तविकता है, इसके पास करने के लिए बहुत कम कार्य है तथा घड़ी की सुई की तरह से हम घूमते रहते हैं और एक **यन्त्र मानव** की तरह से हम जीवनयापन करते हैं। जो सत्य है उससे हम दूर हैं।

हम वास्तविकता के दायरे में प्रवेश कर सकते हैं। जब हम इस दायरे में प्रवेश कर जाते हैं तो न केवल अपने विषय में परन्तु अन्य लोगों के विषय में भी जान सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि उनकी वेशभूषा या आभूषणों के बारे में जान सकते हैं। परन्तु उनके चक्रों की स्थिति के विषय में जान सकते हैं। आप जानकर हैरान होंगे कि हमारे अन्दर के यह सात चक्र हमारे ऊर्जा केन्द्र हैं। इन ऊर्जा केन्द्रों की शक्ति को हम उपयोग करते हैं। परन्तु यदि इनका बहुत अधिक उपयोग करने लगें तो लोगों को तनाव, हृदय रोग या किसी अन्य प्रकार के रोग हो जाते हैं। यही केन्द्र हैं जिनसे हमारी सभी शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक समस्याओं का समाधान होता है। यह सात चक्र हमारे अन्दर हैं, हो सकता है इनके अस्तित्व का ज्ञान आपको न हो। यह सात चक्र हमारे अन्दर केवल विद्यमान ही नहीं है, बहुत से लोगों ने इसकी कुंजी भी प्राप्त की है। अपने असंतोष के कारण हम इन केन्द्रों को एक तरफ (बाएं या दाएं) बहुत अधिक ले जाते हैं।

आप स्वयं सोच सकते हैं कि शारीरिक स्तर पर व्यापारियों को क्या समस्याएं हो सकती हैं। एक चक्र है जिसे हम स्वाधिष्ठान चक्र कहते हैं। यह चक्र बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका कार्य हमारे मस्तिष्क के सफेद कोषाणुओं का पोषण करना है। चिकित्सकों को इसका ज्ञान नहीं है परन्तु यह सत्य है। यदि हर समय हम अपने मस्तिष्क की शक्ति का उपयोग करते रहेंगे तो इसकी शक्ति कहाँ से आएगी ? हमारे सभी विचारों, इच्छाओं, योजनाओं आदि को पूर्ण करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है और यह शक्ति स्वाधिष्ठान चक्र से आती है। स्वाधिष्ठान चक्र को इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ करना होता है। इसी चक्र की सहायता से हमारे जिगर, प्लीहा, गुर्दे कार्य करते हैं। जब यह चक्र एकतरफा कार्य करने लगता है तो इसकी शक्ति भी एक ही ओर जाने लगती है तथा सभी प्रकार के रोग प्रकट हो जाते हैं। सर्वप्रथम जिगर गर्म हो जाता है तथा अधिक सोच–विचार तथा योजनाएं बनाना इसे और अधिक गर्म कर देता है। जिगर, जिसका कार्य इस गर्मी को रक्त प्रवाह में छोड़ना होता है, अपना कार्य नहीं कर पाता। तब यह गर्मी ऊपर नीचे या दाएं बाएं चली जाती है। जब यह ऊपर को जाती है, तो आप हैरान होंगे, व्यक्ति को अस्थमा हो जाता है। बहुत से लोग शिकायत करते हैं कि श्री माता जी मुझे अस्थमा है जो लाइलाज है, नहीं निःसन्देह इसका इलाज हो सकता है। एक चिकित्सक, जो अब अमेरिका में है, को इसी

विषय पर एम.डी. की उपाधि प्राप्त हुई है।

दूसरा रोग जो इसके कारण होता है बहुत आम रोग है– मधुमेह (Diabetes)। यह चक्र अग्न्याश्य की भी देखभाल करता है। इसके खराब होते ही मधुमेह का आरम्भ हो जाता है। जो लोग अत्यधिक सोचते हैं, अत्यधिक योजनाएं बनाते हैं उनके प्लीहा पर इसका दुष्प्रभाव पड़ता है क्योंकि प्लीहा का कार्य संकटकालीन स्थिति में हमारे शरीर को लाल रक्त कोषाणु प्रदान करना होता है। आज के युग में लोग समयबद्ध हैं। हम रात को देर से सोते हैं, सुबह जल्दी उठते हैं और किसी तरह कार में बैठकर दफतर को दौड़ते हैं। हमारा संवेदनशील प्लीहा ऐसे समय पर लाल रक्त कोषाणु देना चाहता है, व्यक्ति की चिन्ताओं के साथ यह भी चिन्तित हो उठता है और इस प्रकार जिस रोग का आरम्भ होता है वह अत्यन्त भयानक है–रक्त कैंसर। तीसरा रोग अचानक गुर्दे का खराब हो जाना है। पहले तो व्यक्ति को डायलिसिस पर डाल दिया जाता है परन्तु इसका खर्च उसे दिवालिया बना देता है। डायलिसिस से मनुष्य निरोग नहीं हो सकता। डाक्टर जो चाहे कहते रहें परन्तु यह सत्य है।

इसके अतिरिक्त भी बहुत से रोग हैं जैसे कब्ज। भयानक कब्ज भी बहुत सी बीमारियों का कारण बनती है। इस गर्मी से हृदय भी नहीं बच सकता। कोई शराब पीने वाला युवा व्यक्ति जो टेनिस खेलता हो, सोचता भी हो, वह भी इसकी पकड़ में आ जाता है। क्यों ? 21 से 25 वर्ष की आयु में हृदय की ओर बढ़ती हुई इस गर्मी के कारण यदि ऐसे व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ जाए तो वह घातक हो सकता है। यह गर्मी जब हृदय को प्रभावित करती रहती है तो हृदय कमजोर हो जाता है और 55 वर्ष की आयु में व्यक्ति को दिल के दौरे पड़ने लगते हैं।

तब लोगों की दुर्दशा हो जाती है, पक्षाघात हो सकता है। इतना भयानक पक्षघात कि पूरा दायां पक्ष कार्य करना बन्द कर देता है। केवल एक चक्र इतने सारे रोगों का कारण बन सकता है, विशेषकर बहुत अधिक योजनाएं बनाने वाले भविष्यवादी लोगों में। ऐसे लोगों को सदा जुकाम हो जाता है और कभी–कभी तो उन्हें फ्लू भी हो जाता है। अब आप कल्पना कीजिए कि एक चक्र जब इतने सारे रोगों का कारण बन सकता है तो यदि किसी का दूसरा चक्र खराब हो जाए तो क्या होगा ? कैंसर, कम्पन रोग (Parkinson) जैसे मनोदैहिक रोग स्वाधिष्ठान चक्र की खराबी से होते हैं तथा अन्य चक्रों को भी खराब कर देते हैं और इन्हें ठीक करने का कोई दूसरा तरीका नहीं होता। आप यदि सोचें कि चिकित्सक इन्हें दवाइयों से ठीक कर देंगे तो ऐसा नहीं हो सकता। आपको इन चक्रों में शक्ति का संचार करना होगा और इसके लिए सर्वशक्तिमान परमात्मा ने मूलाधार अस्थि में कुण्डलिनी नामक शक्ति रख छोड़ी है। क्योंकि यह साढ़े तीन लपेटों में है, और लपेटे को संस्कृत में कुण्डल कहा जाता है, मानव ने इसका नाम कुण्डलिनी रख दिया है। क्योंकि यह मातृ–शक्ति है इसे कुण्डलिनी कहते

हैं। जागृत होकर यह शक्ति इन चक्रों में से होती हुई तालू की हड्डी का भेदन करती है, तब इसका मिलन परमात्मा की सर्वव्यापक शक्ति से होता है।

सत्य क्या है ? सत्य यह है कि पेड़, हरियाली, यह संसार, सभी सुन्दर चीज़ों को हम देखते हैं परन्तु यह नहीं सोचते कि यह सब किस प्रकार बना। है न हैरानी की बात! उदाहरणार्थ यह सुन्दर फूल कितने सुगन्धमय हैं। यह सुगन्ध कौन इनमें डालता है ? आप यदि चिकित्सक से पूछें कि मेरे हृदय को कौन धड़काता है तो वह कहेगा स्वचालित नाड़ी तन्त्र। अब यह 'स्व' कौन है ? यदि वह स्वचालित है तो हमारे अन्दर एक चालक है, यह कौन है ? इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं है। यह आपकी आत्मा है और हम इसलिए जीवित हैं क्योंकि हमारी आत्मा जीवित है। इसका यह अर्थ भी नहीं कि आप लोग जंगलों में या हिमालय में चले जाएं और एक टांग पर खड़े हो जाएं। इसकी कोई आवश्यकता नहीं। आप पूर्व जन्मों में यह सब कर चुके हैं और इसी कारण यहाँ उपस्थित हैं। यह सब नाटक करने या पैसा खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं। इसे आप खरीद नहीं सकते। जैसे आप मानव हैं, आप महान व्यक्ति बन सकते हैं। यह जीवन्त क्रिया है। यह सहज ही में घटित हो सकती है। यह शक्ति सभी में विद्यमान है। आपने केवल इसे पाना मात्र है। उसके लिए आपको कुछ नहीं करना, यह सहज है, स्वतः है। उदाहरण के लिए आपके पास एक बीज है जिसे आपने पृथ्वी में डालना है। इसके लिए आपको क्या करना होगा ? कुछ नहीं, केवल इसे पृथ्वी में डालना होगा क्योंकि बीज में भी शक्ति है और पृथ्वी में भी, यह उपजाऊ है। इसी प्रकार आपकी कुण्डलिनी को भी जागृत करना कठिन नहीं है। ऐसा करने का कोई एहसान नहीं है। अब जब हमारे अन्दर यह शक्ति है और हम इसे प्राप्त कर सकते हैं तो क्यों न हमें ऐसा कर लेना चाहिए।

अब हमें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, यह समझना चाहिए। आज का संसार ऐसा है कि हमें शान्ति प्राप्त होना आवश्यक है और मुन से ऊपर उठे बगैर शान्ति नहीं प्राप्त हो सकती। केवल कुण्डलिनी ही हमें पूर्ण आन्तरिक शान्ति तक ले जा सकती है। हर चीज़ को हम साक्षी रूप में देखने लगते हैं, किसी चीज़ के प्रति प्रतिक्रिया नहीं करते और परिणामस्वरूप हमारी स्मरण शक्ति सुधरती है। जो कुछ भी हम देखना चाहते हैं, मान लो किसी समस्या को, जब तक हम समस्या में फंसे रहते हैं इसका समाधान नहीं कर सकते। परन्तु ज्योंही इस समस्या से बाहर आ जाते हैं समस्या सुलझ जाती है क्योंकि हम परमात्मा से जुड़े होते हैं। हमास एकाकार परमात्मा से है, यह कठिन कार्य नहीं है परन्तु पहले आपको विश्वास होना चाहिए। इतने सारे लोग क्यों विश्वास खो बैठते हैं ? हो सकता है आपने गलतियाँ की हों, उन्हें भूल जाएं। वह आपका भूत था, अब आप उससे जुड़े हुए नहीं हैं। आप वर्तमान में हैं। मैं इसे बसन्त ऋतु कहती हूँ क्योंकि बहुत से लोग आए हैं उनका पुनर्जन्म हुआ है। योगी रूपी फूल खिल उठे

हैं और कुण्डलिनी की जागृति के साथ ही उनपर फल आए हैं। ऐसा हजारों लाखों लोगों के साथ घटित हुआ है और आपके साथ भी ऐसा घटित होना कठिन कार्य नहीं है। इसमें किसी का कोई एहसान नहीं है, मेरा या आपका। ये आपकी निजी चीज़ है। **इसे प्राप्त करने के पश्चात आपको थोड़ी देर के लिए ध्यान अवश्य करना होगा। यह खाइए और यह मत खाइए जैसा कोई बंधन नहीं है। अपने घर और बच्चे छोड़ने की आपको कोई आवश्यकता नहीं है।** सभी लोगों ने यह बात कही है, ईसा ने कहा था " स्वयं को पहचानो" (Know Thyself) मोहम्मद साहब ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि स्वयं को जाने बिना आप परमात्मा को नहीं जान सकते। अब यदि लोग कुछ और बातें कहें तो हमें उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। जब सभी अवतरणों ने कहा है कि स्वयं को पहचानो और ऐसा करना कठिन भी नहीं है तो क्यों न यह किया जाए ? कुछ लोग समझते हैं कि आत्मसाक्षात्कार के पश्चात उनका व्यापार ठप्प हो जाएगा। वे बहुत भयभीत हैं। परन्तु साक्षात्कार के पश्चात दस गुना समृद्ध होंगे क्योंकि आपका दृष्टिकोण ईमानदारी का हो जाएगा और आप सन्तुष्ट हो जाएंगे। ऐसा नहीं है कि आप पागलों की तरह इस पर लग जाते हैं। ऐसा कुछ नहीं है। पागलपन छूट जाता है और आप पूर्णतः सन्तुष्ट हो जाते हैं। अर्थशास्त्र का नियम है कि प्रायः आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकती। जैसे आज आपको एक कार की इच्छा होती है फिर एक घर की, फिर एक वायुयान की, एक के बाद एक, कभी सन्तुष्टि नहीं होती। इसका कारण यह है कि वस्तुएं आपको सन्तुष्ट नहीं कर सकतीं। सन्तोष तो एक मानसिक अवस्था है। साक्षात्कारी व्यक्ति को भौतिक वस्तुएं यदि मिल गईं तो ठीक यदि नहीं मिलीं तो ठीक। वह शारीरिक सुखों की अधिक चिन्ता नहीं करता। उसे आप रेशम पर बिठा दें या फर्श पर वह प्रसन्नचित्त रहता है। वह बादशाह है। कोई चीज़ उसे बाँध नहीं सकती क्योंकि वह बादशाहत में है। आप यह सब प्राप्त कर सकते हैं। इसे प्राप्त करने का आपको अधिकार है। इसे यदि आप प्राप्त कर लें तो बहुत अच्छा होगा। सबसे बड़ी उपलब्धि जो होगी कि आप जान जाएंगे कि आपके ऊपर एक महान शक्ति है–प्रेम की शक्ति। **अब तक किसी ने इस प्रेम की शक्ति का उपयोग नहीं किया। सभी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। आप यह प्रेम की शक्ति उपयोग करें और फिर देखें।** आप देख रहे हैं कि हमारे देश में कितनी खलबली है। लालच अनावश्यक रूप से बढ़ गया है। लोगों के पास धन रखने के लिए स्थान नहीं है। दीवारों में वे धन लगा रहे हैं। क्या वे ये दीवारें अपने साथ ले जाएंगे ? विवेक समाप्त हो गया है। लोभ की भी एक सीमा होती है। लोग किसी चीज़ का आनन्द नहीं ले सकते फिर भी चले जाते हैं। यह पागलपन है। जो भी कुछ आपके पास है आपको चाहिए कि आप इसका आनन्द उठाएं। अब निःसन्देह आप महसूस करेंगे कि श्री माता जी हमें आनन्द के सागर तक ले गई

हैं। जफर नाम का एक मुसलमान डाक्टर हमारा शिष्य है। जब वह हमारे पास आया तो सभी लोग भजन गा रहे थे। मैं नहीं जानती कि उसे क्या हुआ, आनन्दमग्न हो वह गाता रहा। मैंने उससे पूछा, " डाक्टर जफर आपको क्या हुआ ?" उसने उत्तर दिया, " मैं केवल इतना कह सकता हूँ कि मैं पूर्ण आनन्द में था और घंटों तक वह इसी स्थिति में रहा।" मैंने उसे कहा कि " कुछ खा लो", वह कहने लगा, " मैं निर्विचार समाधि में था।"

जरा सोचिए कि आप इतनी पार्टियों में जाते हैं, इतनी पार्टियाँ देते हैं परन्तु आनन्द नहीं उठा सकते। पार होने के पश्चात इधर–उधर की बातें सब समाप्त हो जाएंगी। इतनी मित्रता, इतना प्रेम आपने अभी तक सामूहिकता में कभी न देखा था। यह इतना आनन्ददायी अनुभव है कि हजारों लोग प्रेम के सागर में मिलकर बैठे हुए हैं। जो भी हमें देखता है हैरान हो जाता है।

रूस जैसा देश जहाँ साम्यवाद है, मुझे साम्यवाद से कुछ नहीं लेना–देना, न ही मैं इसके पक्ष में हूँ, परन्तु इससे भी एक अच्छाई निकली कि उनमें कोई इच्छा शेष नहीं बची। सरकार ने उनसे कहा कि हम आपको फ्लैट देंगे, अपने नाम में इन्हें ले लो। उन्होंने कहा,"नहीं हमारे नाम इन्हें मत करो। अपने पास रखो। अपने नाम से चीज़ें लेने से सभी लोग डरते हैं। परमात्मा जानता है कि वहाँ कितने लोग सहजयोगी बन चुके हैं। बहुत से वैज्ञानिक, बहुत से अन्य लोग हैं जिनमें कोई इच्छा नहीं है। केवल 35 प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं जो मालब्रो सिगरेट जैसी चीज़ें चाहते हैं। मैंने उनसे पूछा कि यहाँ सैनिक विपल्व होने वाला है, आपको कोई चिन्ता नहीं ? कहने लगे श्री माता जी हम क्यों चिन्ता करें ? हम परमात्मा के साम्राज्य में हैं यहाँ के साम्राज्य में नहीं ।

किस चक्र से क्या होता है इसके बारे में चिन्ता करना अनावश्यक है। आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लें। आजकल बाजार में बहुत से गुरु हैं। धन बटोरना उनका व्यापार है। **आत्मसाक्षात्कार जैसी अमूल्य चीज़ के लिए कैसे आप धन ले सकते हैं ? जिस गुरु को आप खरीद सकते हैं वह तो आपका नौकर हुआ। वह गुरु कैसे हो सकता है ?** आप यदि इस चीज़ को समझ लें तो अच्छा होगा। हमारे देश में और बाहर भी बहुत से झूठे गुरु हैं। इससे हानि भी हो सकती है। आत्मसाक्षात्कार आपकी अपनी सम्पदा है। आपने इसे प्राप्त करना है। इसके लिए आपको स्वयं पर विश्वास होना चाहिए कि मुझे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

(अनुवादित)

श्री आदिशक्ति पूजा

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (सारांश)

कबैला 9.6.1996

कुण्डलिनी आपके अन्दर आदिशक्ति का प्रतिबिम्ब है। हम कह सकते हैं कि यह आदिशक्ति और आदि–कुण्डलिनी की पूजा है। इस ब्रह्माण्ड में तथा अन्य बहुत से ब्रह्माण्डों में जो भी कुछ सृजन किया गया है वह सब आदिशक्ति का कार्य है।

बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि परमात्मा एक है, यह सत्य है। परमात्मा एक ही है, सर्वशक्तिमान परमात्मा। परन्तु उसकी अपनी शक्तियाँ हैं जिनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति वह किसी व्यक्ति के माध्यम से कर सकता है। अतः सबसे पहले उन्होंने आदिशक्ति की शक्ति की सृष्टि की। इसकी सृष्टि के समय केवल 'शब्द था, शब्द जिसे हम ॐ, लॉगॉस(Logos)–शब्द ब्रह्म या आदिनाद (Primordial Sound) कहते हैं। ये तीनों शक्तियाँ इसी शब्द से उत्पन्न हुईं –ॐ (A,U,M)। आदिशक्ति ही सर्वशक्तिमान परमात्मा की इच्छा को साकार रूप देती हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा की इच्छा उनकी अपनी अभिव्यक्ति के लिए, उनके आत्म–प्रकाश के लिए तथा उनके प्रकटन के लिए उनकी करुणा से न्म लेती है। मैं कहूँगी कि शायद वे अकेलेपन से थक गए थे अतः उन्होंने एक सहचरी का सृजन करने के विषय में सोचा जो उनकी इच्छाओं की अभिव्यक्ति करे। इस प्रकार सर्वशक्तिमान परमात्मा की शक्ति ने उनसे पृथक होकर उनकी करुणा, उनकी इच्छा का रूप धारण किया ताकि चित्त–विलास (आदिशक्ति के आनन्द) का सृजन कर सकें। चित्त–विलास एक संस्कृत शब्द है। चित्त ध्यान–शक्ति(Attention) है। ध्यान–शक्ति का अपना ही आनन्द है और हमारी इस ध्यान–शक्ति के आनन्द की अभिव्यक्ति करने के लिए आदिशक्ति ने सभी ब्रह्माण्डों की सृष्टि की है। उन्होंने इस पृथ्वी माँ की सृष्टि की, सारी प्रकृति का सृजन किया और उन्होंने ही सारे पशु बनाए, मानव बनाए तथा सभी सहजयोगियों को बनाया। इस प्रकार से पूरी सृष्टि का सृजन हो सका।

इस स्तर पर प्रश्न किया जा सकता है कि उन्होंने सीधे ही मानव का सृजन क्यों नहीं कर दिया। यह सर्वशक्तिमान परमात्मा का विचार था, केवल मानव का सृजन, बिना उसे कुछ बताए सभी पशुओं में सबसे अच्छे पशु का सृजन। परन्तु माँ होने के नाते अभिव्यक्ति करने का आदिशक्ति का अपना ही तरीका था। उन्होंने सोचा कि वे सर्वशक्तिमान परमात्मा के लिए ऐसे दर्पण बनायें जिनमें वे अपना रूप, अपनी प्रतिछाया, अपना चरित्र देख सकें। और इस प्रकार इतनी लम्बी विकास

प्रक्रिया घटित हुई। इस विकास प्रक्रिया को इसी प्रकार कार्यान्वित होना था क्योंकि लोगों को ये जानना था कि वे कहाँ से आए। हमें ज्ञान होना चाहिए कि हम प्रकृति से अवतरित हुए हैं। प्रकृति को भी समझना चाहिए कि उसका अवतरण पृथ्वी माँ से हुआ है। **पृथ्वी माँ की अपनी कुण्डलिनी है। वह मात्र बेजान पृथ्वी नहीं है, वे जानती हैं, सोचती हैं, समझती हैं तथा मर्यादित करती हैं।** प्रकृति में आप देख सकते हैं कि किस प्रकार हर पेड़ की अपनी सीमाएं हैं, किस प्रकार हर फल किसी पेड़ विशेष पर ही लगता है। ऐसा किस प्रकार घटित होता है ? इस प्रकार का व्यवस्थापन कौन करता है ? यदि पृथ्वी माँ तेज गति से घूम रही होतीं तो आज जो हम हैं वो न होते, शायद हम जन्में ही न होते। यदि यह गति कम होती तो भी यह विकास न हो पाता। सारी योजना जो बनाई गई थी उसे देखें। यह अत्यन्त सुन्दर योजना है कि पृथ्वी माँ इस प्रकार से सूर्य के इर्द–गिर्द घूमेगी कि भिन्न ऋतुओं का सृजन होगा। यही कारण है कि यह शक्ति, परमचैतन्य, जो कि आदिशक्ति है, ऋतम्भरा प्रज्ञा भी कहलाती है। यही शक्ति सारा जीवन्त कार्य, सारा संयोजन तथा सम्पूर्ण सृजन करती है। अपने मानवीय अहंकार में हम सोचने लगते हैं कि हम कुछ कार्य करते हैं। हम सृजन कर सकते हैं। किसी अन्य चीज़ की तो बात ही छोड़ दें हम तो धूल का एक कण भी नहीं बना सकते। जो भी कुछ पहले से सृजित है उसी को जोड़कर हम कुछ बना सकते हैं। परन्तु यदि आप इसे देखें तो ये सभी कुछ हमारी शक्ति से परे है। हम कुछ भी नहीं बना सकते। जो भी सृजन हम करते हैं वह हमारी कल्पना मात्र है। उदाहरण के रूप में कोई चीज़ सोने से बनी है तो वह अब भी सोना है। लकड़ी से बनी चीज़ अब भी लकड़ी है और ये सिद्धान्त सभी वस्तुओं पर लागू होता है। आपका जन्म जो भी रहा हो, जिस भी देश में आप जन्में हों, आपकी जो भी संस्कृति हो, आप मानव हैं। मूल रूप से आप समान हैं। आप समान रूप से हँसते हैं, समान रूप से मुस्कराते हैं और समान रूप से रोते भी हैं। मैंने कभी किसी को उसके हाथों से रोते हुए नहीं देखा, और इस प्रकार हमें महसूस करना चाहिए कि हम जीवन के किसी एक समान सिद्धान्त में बंधे हुए हैं। आदिशक्ति का दिया हुआ यह समान सिद्धान्त, जो हमें बांधे हुए है, वह है हमारे अन्तःस्थित कुण्डलिनी। सभी मानवों में कुण्डलिनी है। **पशुओं में कुण्डलिनी होती है परन्तु यह उतनी विकसित नहीं होती। परन्तु मानव में इसका विकास इस प्रकार हुआ है कि यह योग प्रदान कर सकती है,** हमारे अन्तःस्थित दिव्य शक्ति के रूप में जो कि आदि–कुण्डलिनी का प्रतिबिम्ब है और इस कलियुग में ही इसकी जागृति सुगमता से होती है। हम सबमें यही समान तत्व है। अतः हमें सभी लोगों का,

सभी मानवों का सम्मान करना चाहिए चाहे वह किसी राष्ट्र से हों, किसी देश से सम्बन्धित हों, किसी रंग के हों, क्योंकि उन सब में कुण्डलिनी विद्यमान है। फिर आप ही लोगों की तरह से कुछ जागृत लोग हैं जिन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है तथा वे प्रबुद्ध हो गए हैं। जब आप समझ जाते हैं कि यह आदि माँ (Primordial Mother)के चित्त का आनन्द है, यह मात्र लीला एवं आनन्द है, तो जब आध्यात्मिकता में आप पूर्ण उत्थान पा लेते हैं तब आपके साथ क्या घटित होना चाहिए ? हमें क्या महसूस होना चाहिए ? तब हमें किस प्रकार होना चाहिए ? यह प्रश्न आपने बहुत बार पूछा है। आपका प्रश्न पूछना ही इस बात का द्योतक है कि आप वहाँ नहीं पहुँचे क्योंकि उस स्थिति में पहुँचने पर आप प्रश्न नहीं पूछते।

दूसरे उस स्थिति में पहुँच कर आप मात्र अस्तित्व बन जाते हैं और अस्तित्व बनते ही आप दैवी चरित्र प्रतिबिम्बित करने लगते हैं। यह दैवी चरित्र केवल आजकल ही अभिव्यक्त नहीं किया जा रहा, यह बहुत पहले से होता आया है। सभी धर्मों में कुछ लोग ऐसे थे जिनका पूर्ण विकसित दिव्य चरित्र था। उदाहरणार्थ तीन हजार वर्ष पूर्व कोलम्बिया में रहने वाले लोगों में मैंने पाया कि उनकी मूर्तियों में कुण्डलिनी और कुम्भ प्रायः विद्यमान थे। उनमें साढ़े तीन कुण्डलों में कुण्डलिनी की अभिव्यक्ति की गई थी। अब यह कुण्डलिनी, जो हमारे अन्तःस्थित है, यह प्रमाणित हो चुकी है। आप जानते हैं कि हमारे अन्दर यह शक्ति है और आप यह भी जानते हैं कि जब हम अपने उत्थान के मध्य मार्ग से भटकते हैं तो क्या होता है। ऐसी स्थिति में कुण्डलिनी, जो कि आदि माँ की अभिव्यक्ति है, आपको आपकी अंगुलियों के सिरों पर बताती है कि आपमें क्या दोष है, आपमें कहाँ कमी है और आपकी क्या समस्या है ?

अब जब हम प्रबुद्ध हो गए हैं, सन्त बन गए हैं और सब लोगों से ऊपर हैं तो हमें क्या करना चाहिए ? अब हमें भली–भांति समझना चाहिए, केवल मानसिक रूप से ही नहीं ह्रदय से, कि अब हमें ये चैतन्य लहरियाँ प्राप्त हो गई हैं और ये हमें बता सकती हैं कि हम क्या हैं ? समस्या क्या है ? हर स्थान की स्थिति ये आपको बतायेंगी। कुछ लोग येरूसलेम गए थे, उनसे मैंने बात की तो कहने लगे, "श्री माता जी पूरा स्थान ही चैतन्य लहरियों से परिपूर्ण था।" कोई व्यक्ति छिंदवाड़ा गया और उसने कहा, "मैं माँ का स्थान ढूंढ लूंगा ऐसा करना कोई कठिन कार्य नहीं है, चैतन्य लहरियों के माध्यम से मैं खोज लूंगा", उसने बताया, "ज्यों ही में रेलवे प्लेटफार्म पर उतरा तो मैं उछल पड़ा, मेरी समझ में नहीं आया कि यहाँ से कहाँ जाऊं क्योंकि यहाँ तो इतना चैतन्य प्रवाह है। मैं किस प्रकार माँ के स्थान तक पहुँचूंगा"? वह बैठ गया और सोचने लगा, "अब मैं किस प्रकार खोजूंगा

कि श्री माता जी का जन्म कहाँ हुआ था'? वह बैठा हुआ था तभी उसने शुक्र नामक सितारा देखा उस सितारे का अनुसरण करते हुए वह चल पड़ा और उसे वह स्थान मिल गया।

पूरी योजना, पूरा कार्य अव्यवस्थित रूप से ही नहीं हो जाता। आप यदि पेड़ों को देखें तो सभी पर फल होते हैं और सभी पत्तों को सूर्य की किरण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। प्रकृति में सभी कुछ इतना सुन्दर तथा समरस होता है। हम लोग ही प्रकृति को बिगाड़ते हैं क्योंकि हम यह नहीं समझते कि हम भी प्रकृति से आए हैं और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। मैं आपको बहुत बार बता चुकी हूँ कि भिन्न रसायनों से किस प्रकार मानव का सृजन किया गया। कार्बन की उत्पत्ति भी पृथ्वी माँ से हुई। यह सब हमें बताता है कि हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इस सारे कार्य में हजारों वर्ष लगे और अब आप उस स्थान पर पहुँचे हैं जहाँ आप 'आप' बन सकें। आप स्वयं (आत्मा) को जान लें। विकास प्रक्रिया में यह बहुत बड़ी छलांग है। विकास प्रक्रिया बहुत समय पूर्व आरम्भ हुई। आदिशक्ति और आदि–कुण्डलिनी की पूजा करना आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आप नहीं समझ सकते कि किस प्रकार आप सन्त बन गए। जब आप अपने अन्दर जान लेंगे कि आपमें ये सारे केन्द्र हैं और कुण्डलिनी की जागृति द्वारा इन सब केन्द्रों को जागृत किया जाना है तथा आपकी अंगुलियों के सिरों पर कुण्डलिनी अपनी अभिव्यक्ति करती है, इस ज्ञान से जब तक आप पूर्ण तदात्मय नहीं कर लेते तब तक पूर्णता प्राप्ति के पथ से आपके भटकने की सम्भावना सदा बनी रहेगी। सहजयोग में आने वाले बहुत से लोगों को मैंने देखा है कि वे कुछ आधे–अधूरे सहजयोगियों से मिलते हैं और दिमागी होने के कारण वे बहस करने लगते हैं कि यह कैसे हो सकता है ? वह कैसा सहजयोगी हैं और कैसे वह इस प्रकार का आचरण कर सकता है? परमात्मा की शक्ति का वर्णन करने के लिए लोगों के बहुत से तरीके हैं। आरम्भ में ही मैंने आपको बताया कि अकेलापन महसूस होने के कारण परमात्मा ने आदिशक्ति का सृजन किया और उनके माध्यम से पूरे ब्रह्माण्ड की सृष्टि की गई। परन्तु यह भी सत्य है कि **जिस प्रकार आप परमात्मा को खोज रहे हैं परमात्मा भी आपको खोज रहे हैं।** यदि आप परमात्मा के विषय में एक साधारण सी बात समझ लें कि उन्होंने ही आपको बुद्धि प्रदान की है तो आपकी खोज का पूरा फल आपको प्राप्त हो जाता है। उन्होंने ही आपको विवेक प्रदान किया है। उन्होंने ही आपको सभी कुछ दिया है। यदि आपकी सभी उपलब्धियां कुण्डलिनी ने ही आपको दी हैं, कुण्डलिनी की इस मातृ शक्ति ने, तो यह समझना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि उन्हें प्रसन्न रखना कितना महत्वपूर्ण है। यह देखना आपके लिए अत्यन्त आवश्यक है कि किस प्रकार उन्हें

प्रसन्न रखा जा सकता है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तियों में तथा परमात्मा में एक सम्बन्ध होता है और परमात्मा तभी प्रसन्न होंगे जब आप प्रसन्न होंगे। हम कह सकते हैं कि परमात्मा हमें प्रसन्नता प्रदान करते हैं, परन्तु जब आप प्रसन्न होते हैं तभी परमात्मा प्रसन्न होते हैं, यह ऐसा सम्बन्ध है। यह इतना निकटतम है, हम कह सकते हैं जैसे सूर्य की किरणें होती हैं या चांद की चांदनी – यह इतना निकटतम है। यह इतना अन्तर्जात है कि यह आपको स्वयं पर और आपके अपने विकास पर नियन्त्रण प्रदान करता है। नाना विधियों से वर्णन किया गया है कि आपको समर्पण करना होगा। कोई यदि तलवार लेकर आ जाए और समर्पण करने के लिए कहे तो हो सकता है कि आप समर्पण कर दें, परन्तु उस व्यक्ति के जाते ही आप भी एक तलवार उठायेंगे और उस व्यक्ति का गला काट देंगे। इस प्रकार का समर्पण बेमायना है। ये समर्पण तो आप पर थोपा हुआ है। इस प्रकार के सभी समर्पणों से समस्याएं उत्पन्न होती रहीं क्योंकि इन से प्रतिक्रिया होती है। परन्तु परमात्मा के सम्मुख आपका समर्पण अत्यन्त आनन्ददायी होता है, जैसे समुद्र में डाला गया नमक पानी में स्वतः ही घुल जाता है। यह घुलनशील स्वभाव वास्तव में आनन्ददायी है। यदि आप अपने अन्तस में यह महसूस कर सकें कि आप परमात्मा से एकरूप हो चुके हैं, दिव्य सागर में आप विलीन हो गए हैं तब आप केवल अनन्त प्रेम एवं करुणा रूप हो जाते हैं और परिणामतः अत्यन्त आनन्द मग्न हो जाते हैं।

बहुत से लोग मुझे कहते हैं कि श्री माता जी किसी को क्षमा करना बहुत कठिन है। परन्तु मैं सोचती हूँ कि किसी को क्षमा न करना बहुत भयानक है। क्षमा करने में महान आनन्द है, एक अत्यन्त महान आनन्द और आपके क्षमा करते ही परमात्मा बागडोर संभाल लेते हैं और आपकी देखभाल करते हैं। कोई आपको अशान्त नहीं कर सकता परन्तु पहले आप परमात्मा के सम्मुख समर्पण तो करें। क्षमा इतनी महान है। किसी को दंड देने का कष्ट न उठाएं और न ही किसी के विरुद्ध कुछ करने का कष्ट उठाएं। आपसे बागडोर परमात्मा ले लेता है और जो भी आवश्यक होता है करता है और उनकी कार्यशैली इतनी सुन्दर होती है कि देखते ही बनती है! आदिशक्ति की शक्ति और परमात्मा का वर्णन सभी धर्मों में किया गया है। इस्लाम में इसे 'रूह' कहा गया है। बाइबल में इसे 'सर्वव्यापक शक्ति' कहा गया है। इसे 'अलख'–जिसे देखा नहीं जा सकता– कहा गया है। इस दिव्य शक्ति के लिए सब शब्द उपयोग किए गए हैं। लोगों ने इसके विषय में सुना है, इसका गुणगान किया है परन्तु दुर्भाग्यवश बहुत कम लोगों ने इसे महसूस किया है, और महसूस करने के बाद उनकी समझ में नहीं आया कि किस प्रकार इसे दूसरों को दिया जाए, किस प्रकार अन्य लोगों को

इसका अनुभव कराया जाए। तो जो भी कुछ उन्होंने कहा कहानी मात्र बन गया या कुछ बेतुकी बात। कोई विश्वास न कर पाया कि वे इस प्रकार का कोई अनुभव पा चुके हैं और न ही कोई ये कल्पना कर पाया कि इस प्रकार की शक्ति वास्तव में विद्यमान है। अब सौभाग्यवश आप सब लोगों के लिए यह एक शाश्वत सत्य बन गया है कि आप जानते हैं कि ऐसी शक्ति है। इस शक्ति के विषय में आप विश्वस्त हैं क्योंकि इसे आप अपने अन्तस में महसूस कर सकते हैं और जब आप इसे महसूस करते हैं तो आनन्द विभोर हो जाते हैं। आप समझ पाते हैं कि कोई व्यक्ति आपको सत्य कह रहा है या नहीं, क्योंकि चैतन्य लहरियों से आप इसे जाँच सकते हैं, आदिशक्ति की शक्ति द्वारा, वह आपको सत्य बात ही बताती हैं। यदि किसी व्यक्ति ने आपको कोई हानि पहुँचाई है, और अब यदि आप कहें कि श्री माता जी आप उस व्यक्ति को क्षमा कर दीजिए तो यह सत्य न होगा क्योंकि निश्चित रूप से उसने आपको हानि पहुँचाई है और मेरे क्षमा करने का अर्थ यह होगा कि मैंने स्वीकार कर लिया कि उसने नहीं पहुँचाई। इस प्रकार का तर्क–वितर्क सम्भव है। आप हैरान होंगे कि आप उस व्यक्ति को इसलिए क्षमा करते हैं कि आप उसे क्षमा करें या न करें आप कुछ नहीं करते। यह सत्य है। अतः करुणावश यदि आप किसी को क्षमा करते हैं तो करुणा सत्य बन जाती है। करुणा आपको सत्य बताती है। अतः जो भी पूर्ण सत्य आप जान पाए हैं यह परमेश्वरी शक्ति की करुणा के माध्यम से जान पाए हैं। कभी–कभी लोग यह भी कह सकते हैं कि श्री माताजी हमने चैतन्य लहरियाँ देखीं, हमने इस प्रकार अनुभव किया फिर भी यह घटित हो गया। जो कुछ भी हुआ उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो हो गया वो हो गया, कोई बात नहीं। आपने चैतन्य लहरियाँ महसूस की और चैतन्य लहरियों से पूछा, चैतन्य लहरियों के अनुसार कार्य किए, बस। घटनाएं इच्छित रूप से घटी या नहीं यह एक अलग बात है क्योंकि उन्हें उसी ढंग से ही घटित होना था। कोई नाटक चल रहा है। **यह 'चित्तविलास' है, परमात्मा के चित्त का आनन्द। एक लीला चल रही है। यदि आप इस लीला को देख सकेंगे तो अशान्त न होंगे।** यह एक लीला है, यह किस प्रकार कार्यान्वित होगी, किस प्रकार इसकी व्यवस्था होगी, यह आपका सिरदर्द नहीं। आपको मात्र परमात्मा की इस लीला को देखना है कि यह किस प्रकार कार्यान्वित होती है। आप सब ने देखा है कि चमत्कार होते हैं। श्री माता जी यह चमत्कार हुआ, और मैं जानती हूँ कि सभी चमत्कार दिव्य हैं। **जब आपकी श्रद्धा प्रबुद्ध है तो जीवन की महत्वपूर्णतम चीज़ों के लिए भी आप चिन्ता न करें। यदि यह कार्यान्वित होती है तो भी ठीक और नहीं होती तो भी ठीक। यह नहीं मान लेना चाहिए कि एक**

बार आत्मसाक्षात्कार पा लेने के बाद पूरा विश्व आपके चरणों में आ गिरे। यह आवश्यक नहीं है। यह लीला है। यह आदिशक्ति के चित्त का सुन्दर आनन्द है। यदि आप इसके साक्षी बन सकते हैं, यदि आप इस पूरी लीला के वास्तविक रूप में साक्षी बन सकते हैं तो आप आध्यात्मिक रूप से बहुत समीप जा सकते हैं, आप परमेश्वरी शक्ति में विलीन हो सकते हैं। इस विलय को घटित होना है और यही कारण है कि आदिशक्ति की पूजा आपके लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आदिशक्ति ने अवतरण न लिया होता तो यह कार्य न हो पाता क्योंकि इसने मानव जीवन की सभी निष्ठुरताएं और मानव जीवन के अन्य सभी पक्षों को समेट लिया होता। इसे ऐसा अवतरण होना पड़ा जो मानव को पूर्ण रूप से देखेगा, न केवल उसके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक पक्षों को या उसकी विशेष विचारधाराओं तथा उलझनों को। सभी मानव अपने अन्तस में एक ही जैसे हैं। कुछ अधिक संवेदनशील हैं और वास्तव में जिज्ञासु। कुछ की खोज वास्तविक नहीं है तथा कुछ खोज ही नहीं रहे, परन्तु आपको तो जिज्ञासा भी आदिशक्ति ने दी है।

अब इस प्रकार हुआ कि विकास प्रक्रिया में माँ से एक मछली निकली, उस समुद्र में से जो समुद्र की माँ सम था, और फिर दस–बारह मछलियां बाहर आईं। तत्पश्चात् मछलियों के झुंड बाहर आए। इसी प्रकार आपका भी विकास कार्यान्वित हुआ है। अब हमारी संख्या बहुत बढ़ी है। हमने सन्त जॉन द्वारा बताई गई संख्या को भी पार कर लिया है। ऐसा लगता है कि यह बहुत ही उपजाऊ क्षेत्र है, अति उपजाऊ समय है। इस कलियुग में बहुत से लोग ईश्वरत्व को अपना रहे हैं। ऐसा करने का यह ठीक समय है। कल मैंने आपका नाटक देखा, मैंने ये सब चीज़ें स्वयं देखी हैं और मैं हैरान हुआ करती थी कि इन लोगों का क्या होने वाला है। न जाने किस प्रकार उन्होंने भी अध्यात्म को अपना लिया है। आधुनिक युग में जो भिन्न चीज़ें आप देखते हैं इनसे आपको बहुत परेशान नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह सब तो ऐसे ही होना है। यह सब एक नाटक है, एक लीला है और इस नाटक में, आपको समझ लेना चाहिए, सभी कुछ इतने सुन्दर रूप से कार्यान्वित होगा कि कुछ समय पश्चात् आपको परमात्मा ये सभी व्यर्थ की चीज़ों, जैसे हमारे बन्धन एवं अहम् आदि, को विघटित करते हुए मिलेंगे। इसके अतिरिक्त कुछ न होगा सहजयोग में बहुत लोग होंगे। वर्ष 2000 तक पूरे विश्व में असंख्य सहजयोगी होंगे। एक बार जब हमारी संख्या बढ़ जाएगी तो बहुत से लोग इसमें कूद पड़ेंगे। यह मानव स्वभाव भी है। जब तक सहजयोग में बहुत से लोग न होंगे लोग इसे अपनायेंगे नहीं, एक बार जब हमारी संख्या बहुत

अधिक हो जाएगी तो लोग इसमें कूद पड़ेंगे। कुछ लोग सदैव चिन्तित रहते हैं कि श्री माता जी हम तो अब स्वर्ग में हैं, जीवन का आनन्द ले रहे हैं, अन्य लोगों का क्या होगा ? आपका चित्त केवल इस बात पर होना चाहिए कि किस प्रकार मैं इस आनन्द एवं करुणा के सागर में अन्य लोगों को भी विलीन कर सकूंगा। आप आश्चर्यचकित होंगे कि आपकी अपनी करुणा ही आपको शक्ति दे पाएगी। जब आप लोगों को पूर्ण डूबते हुए देखेंगे, उन्हें पूर्ण नष्ट होते हुए देखेंगे तो स्वयं आपकी करुणा आपको शक्तिशाली बना देगी और आप सभी आवश्यक कार्य करेंगे। सभी मूर्खतापूर्ण कार्यकलापों को छोड़कर लोगों को मुक्त करने के कार्य में आप स्वंय को लगा देंगे और जैसे–जैसे आप यह कार्य करेंगे, आश्चर्यजनक रूप से आपकी अपनी आध्यात्मिकता का स्तर ऊँचा उठ जाएगा। पानी में यदि आप नमक घुला दें तो पानी का स्तर ऊँचा उठ जाता है। इसी प्रकार जितने अधिक लोग सहजयोग में आएंगे उतनी ही अधिक दिव्य शक्ति अपनी अभिव्यक्ति करेगी। यह अभिव्यक्ति अब भी हो रही है। परन्तु जितने अधिक लोग होंगे उतना ही अधिक दिव्य शक्ति का प्रकटीकरण होगा। क्योंकि यह बहुत से माध्यमों का इसे कार्यान्वित करने जैसा होगा।

इस स्थिति में, जबकि हम जानते हैं कि दिव्य शक्ति है, आप सब लोगों को आत्मसाक्षात्कार मिल गया है तथा यह भी कि अब आप सब सन्त पुरुष हैं, तो हमें उन लोगों की ओर देखना चाहिए जो इस प्रकार के थे। जैसे सूफी, नाथपन्थी, ग्नोस्टिक तथा भिन्न धर्मों में भिन्न प्रकार के लोग। उन्होंने क्या किया ? अन्य लोगों को इस सत्य के प्रति जागृत करने के लिए, कि दिव्य शक्ति विद्यमान है, उन्होंने अपना सर्वस्व लगा दिया। वे आत्मसाक्षात्कार न दे सकते थे। दिव्य शक्ति का कोई प्रमाण भी वे न दे सकते थे फिर भी उन्होंने इसे कार्यान्वित किया, इसके विषय में बातचीत की, इसके गीत गाए। यही चीज़ हमें समझनी है कि करुणा की अभिव्यक्ति को कोई भी बाधा न रोक पाए। जब आप जानते हैं कि लोग डूब रहे हैं, वे भयानक समस्या में फंसे हुए हैं, मानव पर आसुरी प्रवृत्तियों का यह भयानक आक्रमण है, और आपमें यदि करुणा विद्यमान है तो उन्हें बचाने के लिए आप जी–जान से लग जायेंगे। **इस चित्त–विलास का, आपके चित्त के आनन्द का यही कार्य है।** जब आप अधिक से अधिक लोगों को परमात्मा की शक्ति में लाने लगेंगे तो आपके अपने चित्त से आनन्द प्राप्त होगा। देवत्व के बिना मानव को बचाया नहीं जा सकता, सभी लोग इस बात को स्वीकार करते हैं और इस बात को कहते हैं। परन्तु वे बिल्कुल नहीं जानते कि दिव्यता है क्या और इसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु आप सब लोगों के पास यह शक्ति है। आपमें कुण्डलिनी

जागृत करने की शक्ति है, आप सभी चक्रों के बारे में जानते हैं, सभी चक्रों के दोषों के विषय में आप जानते हैं, हर चीज की सच्चाई चैतन्य लहरियों के माध्यम से जान सकते हैं, जितना अधिक आप इस शक्ति का उपयोग करेंगे उतना ही बेहतर होगा। आपको उन क्षेत्रों में जाना होगा जहाँ अब तक आप नहीं गए। अफ्रीका में बहुत कम सहजयोगी हैं अतः मैं अगले वर्ष अफ्रीका जाकर इस कार्य को करने की सोच रही हूँ। और भी बहुत से क्षेत्र हैं जहाँ मैं सोचती हूँ कि कार्य होना चाहिए। आपमें यदि करुणा है तो यह आपको उन लोगों को भी शान्ति प्रदान करने के लिए कार्य करने को विवश कर देगी जो जिज्ञासु नहीं हैं। मैं कुछ गैर–सरकारी संस्थाएं (N.G.Os) बनाने में व्यस्त हूँ जो वास्तव में दीन–दुखियों के लिए बहुत सुन्दर कार्य करेंगी। वे भूखों मर रहे हैं, कष्ट में फंसे हैं और बहुत तकलीफ भोग रहे हैं। केवल आप लोग ही उनके हित के लिए कुछ कर सकते हैं क्योंकि सहजयोग में आकर आपने लालच और लोभ त्याग दिए हैं। सभी कुछ हो चुका है, अब आप आज़ाद हैं और पूर्णतः स्वतन्त्र। इस स्थिति में आपकी करुणा पथ–भ्रष्ट नहीं हो सकती। क्योंकि मैंने देखा है कि बहुत से लोग जब इस प्रकार का कार्य करने लगते हैं तो वे या तो नेता बनने लगते हैं या धनवान या अन्य लोगों को लूटने लगते हैं। आप लोग ऐसा नहीं करेंगे। ईसा मसीह के कथनानुसार आप वास्तव में 'नमक' हैं। वह नमक जो देवतत्व में पूर्णतः घुल गया है और यह नमक बहुत से अन्य लोगों को भी देवतत्व में घुला देगा।

मैं यह नहीं कर रही हूँ कि हमें मिशनरियों की तरह से लोगों को मजबूर करके सहज़योगी बनाना है। सर्वप्रथम हमने उनकी कमियों को दूर करना है। वास्तव में इस संसार में बहुत कम ईमानदार लोग हैं। मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जिनमें कभी लालच न था परन्तु ज्यों ही उन्हें शक्तियाँ प्राप्त हुईं वे भयानक रूप से लालची हो गए। इतने लालची कि उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। परन्तु सहजयोगी ऐसा नहीं करेंगे अपनी करुणा का वे आनन्द आनन्द लेंगे, अपनी वासना, अपने लालच, नशे, शराब तथा अन्य मूर्खतापूर्ण चीज़ों का नहीं। वे जानते हैं कि आनन्द कहाँ प्राप्त हो सकता है। एक बार जब आप जान जायेंगे कि आनन्द कहाँ प्राप्त होता है तो आप इसे अधिक से अधिक प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। अब आपके लिए ऐसा कर पाना बहुत ही सुगम हो गया है।

जिस प्रकार पुरुष कार्य कर रहे हैं स्त्रियों को भी चाहिए कि इसे कार्यान्वित करें क्योंकि स्त्रियों में करुणा और क्षमाविवेक पुरुषों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। क्योंकि वे माताएं हैं, उनके बच्चे हैं, वे जानती हैं कि बच्चों का प्रेम क्या होता है। माँ किसी चीज़ की आशा नहीं करती वह मात्र इतना जानती है कि उसका बच्चा ठीक हो और

प्रसन्न रहे। वह अपने बच्चे का आनन्द लेती है, यदि आप एक स्त्री हैं तो आपमें अन्तर्जात रूप से करुणा विद्यमान है। मैंने देखा है कि छोटी–छोटी लड़कियाँ किसी बालक को देखती हैं तो उसकी ओर दौड़ती हैं। वे उसे उठाना चाहती है उनके पास गुड़ियाँ होती हैं और वे इनकी बच्चों की तरह देखभाल करती हैं। स्त्रियों के लिए करुणा दर्शाना और उसकी अभिव्यक्ति करना कहीं सुगम कार्य होना चाहिए। विवाह के पश्चात् भी आपके दिव्य स्वभाव से आपके पति शक्ति प्राप्त करते हैं। आप क्या न्यौछावर करते हैं? कुछ लोग कहते हैं कि परमात्मा के लिए यह बलिदान करता हूँ, वह बलिदान करता हूँ। परमात्मा के लिए क्या बलिदान किया जा सकता है ? परमात्मा को क्या आवश्यकता है ? उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। आपने तो अपने मस्तिष्क ही बलिदान कर दिए हैं, इनमें विवेक लुप्त हो गया है।

परमात्मा को परिवर्तन पसन्द है और वह हृदय को परिवर्तित कर देते हैं, कि आप समझ भी नहीं पाते कि यह किस प्रकार घटित हो गया! आपको केवल इस लीला का आनन्द लेना है। सहजयोगियों में परस्पर तालमेल होना चाहिए और उन्हें परस्पर आनन्द लेना चाहिए। सहजयोगी यदि जीवन का आनन्द नहीं लेता तो और कौन लेगा ? मैं नहीं समझ सकती कि किसी व्यक्ति की यदि कुण्डलिनी जागृत हो गई हो, जिसने प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति को महसूस कर लिया हो, जिसे सत्य का ज्ञान प्राप्त हो गया हो, जो परमात्मा से एकरूप हो गया हो, ऐसे व्यक्ति को किस प्रकार कोई समस्या हो सकती है ? यह महसूस करना है कि आप सर्वशक्तिमान परमात्मा के साम्राज्य में बैठे हुए हैं। आप इस साम्राज्य में प्रवेश कर चुके हैं और आदिशक्ति की करुणा एवं चित्त आप पर है। परन्तु यह तो ऐसा हुआ जैसे आप भिखारी को राज गद्दी पर बैठा दें तो गद्दी पर बैठा हुआ भी वह भीख मांगता रहता है। सहजयोगियों की भी कभी–कभी यही स्थिति होती है। आप सबको कम से कम इस स्थिति पर काबू पाना है क्योंकि अन्य लोगों पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। आपके अपने जीवन के लिए भी यह बहुत आवश्यक है कि जो शक्तियाँ आपने प्राप्त की हैं उनकी सूझबूझ में आप पूर्णतः विकसित हों। जब आप यह कहते हैं कि आपको अपनी माँ के प्रति पूर्णतः समर्पित होना है तो इसका क्या अर्थ है ? मुझे क्या समर्पित करना है ? **आप अपने अन्दर के पथ–भ्रष्ट, विनाशशील अवगुणों, अपने अहम् तथा बन्धनों को समर्पित करते हैं, बस। और ये समर्पण आप स्वयं को पवित्र करने, अपना आनन्द लेने और सर्वशक्तिमान परमात्मा को समझने के लिए करते हैं।** यदि आप स्वयं को नहीं जानते तो परमात्मा को किस प्रकार जानेंगे। यह असम्भव है। अतः स्वयं को जानने के लिए

आपको विकसित होना होगा। मैं जानती हूँ कि कुछ बहुत महान सहजयोगी हैं परन्तु अब भी ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जिन्हें इन महान विकसित सहजयोगियों को प्रवेश करके कार्यान्वित करना है। आप लोग यह कार्य कर सकते हैं।

पहली बार जब मैं रोम में आई तो सभागार में एक भी व्यक्ति न था। मैंने कहा इस देश का क्या हश्र होने वाला है। अब यहाँ इतने सारे सहजयोगी है **परन्तु जिस प्रकार सहजयोग, क्षितिजीय रूप में फैल रहा है, इसे ऊपर की ओर भी बढ़ना चाहिए। संख्या में बढ़ोतरी के साथ–साथ इसकी गहनता का स्तर भी ऊंचा होना चाहिए।** ज्यों–ज्यों आपकी गहनता का स्तर बढ़ेगा। अधिकाधिक लोग आएंगे क्योंकि मैं जानती हूँ कि हर समय आप इतने सामूहिक होते हैं कि आपको लगता है कि श्री माता जी मैं अभी भी सहजयोगी नहीं हूँ, मेरा भाई भी अभी सहजयोगी नहीं है। मैं जानती हूँ कि आपमें वह भावना है, उनको भूल जायें। परन्तु जो जिज्ञासु हैं उन तक पहुँचे। वही आपके सच्चे सम्बन्धी हैं। तब बाद में ये लोग सम्मिलित हो जायेंगे– आपके पिता, माँ भाई, बहन, बच्चे। उस समय तक वे प्रतीक्षा करेंगे। वे जिज्ञासु नहीं हैं, जो जिज्ञासु हैं आप उन्हें खोजें, पता लगाएं कि वे कहाँ हैं। जो भी कुछ आप चाहेंगे मैं हर सम्भव प्रकार से आपकी सहायता के लिए मौजूद रहूँगी। कोई चीज़ जो आपको कठिन लगती है उसका कारण यह है कि आप स्वयं को इसका कर्त्ता मान बैठते हैं, यदि आप इसे परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति पर, आदिशक्ति की शक्ति पर, परमचैतन्य पर, छोड़ दें तो कुछ भी कठिन नहीं है। कुछ भी इतना बुरा नहीं है कि आप इसे सम्भाल न सकें।

इस पूजा का किया जाना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी प्रकार आपका उत्थान होता है। यह प्रतिबिम्ब सुधरता है और आप आदिशक्ति की शक्ति के माध्यम से या कुण्डलिनी की शक्ति के माध्यम से अपने अन्तस में अधिक से अधिक विकसित होते हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि आदिशक्ति की अपनी कुण्डलिनी है जो कि आदि कुण्डलिनी कहलाती हैं और कुण्डलिनी आपके अन्दर उसका प्रतिबिम्ब है। आपको पूजा करनी है और अपनी कुण्डलिनी, आपकी अपनी माँ– जिसने आपको जन्म दिया है– को प्रसन्न करना है।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

श्री माताजी की सहजयोगियों से बातचीत

ग्लैनरॉक, आस्ट्रेलिया, 1 मार्च, 1992

आज मैं आपसे कुछ ऐसे मामलों पर बात करना चाहती हूँ जहाँ लोग उलझ जाते हैं। सहजयोग में कुछ बातें समझ लेना हमारे लिए आवश्यक है।

पहली बातः सहजयोग में धर्मान्धता का कोई स्थान नहीं है। कोई भी मेरे शब्दों का प्रयोग न करे, न ही ये कहे कि श्री माता जी ने ऐसा कहा था। इसी प्रकार चर्च में और अन्य स्थानों पर धर्माधिकारी वर्ग की रचना हुई। हर व्यक्ति पढ़ सकता है तथा पता लगा सकता है। यह कहना कि, "श्री माता जी ने ऐसा कहा था", लोगों को वश में करने का एक तरीका है। यह दर्शाता है कि आप लोगों को अलग हटने के लिए कह रहे हैं। आप कार्यभारी नहीं हैं।

यदि मैं सहजयोगियों के कार्यक्रम में कोई बात कहती हूँ तो इसलिए कि यह मेरे तथा मेरे बच्चों के बीच दिल की बात होती है। बिना अगुआ से सम्पर्क किए, अनियन्त्रित रूप से, आपके कम्प्यूटरों द्वारा उसे चहुँ ओर फैलाया नहीं जाना चाहिए। सहजयोग में कोई उतावली नहीं है। अतः उतावलापन नहीं होना चाहिए। यह बात मैं स्पष्ट रूप से कह रही हूँ।

मैंने जो भी कहा उसे कोई याद नहीं रखता। वे केवल मेरा नाम प्रयोग करते हैं। माँ ने 1970 में ऐसा कहा था। 1970 में कभी अंग्रेजी नहीं बोली। अतः ये सब ऐतिहासिक कथन प्रयोग नहीं किए जाने चाहिएं। हम वर्तमान में रहते हैं। हो सकता है उस समय स्थिति कुछ भिन्न रही हो। हो सकता है तब सहजयोगी नए नए सहजयोग में आ रहे थे, हो सकता है उन्हें किसी प्रकार के पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता रही हो। यह एक यात्रा है। उतराई या चढ़ाई पर चलते समय आपको भिन्न विधियाँ अपनानी पड़ती हैं। अब आप समतल पृथ्वी पर चल रहे हैं। आपका व्यवहार ऐसा नहीं होना चाहिए कि जिससे ये लगे कि आप पर्वत पर चढ़ रहे हैं। अतः सहजयोग में अधिकाधिक लोगों को मुक्ति देना ही हमारा लक्ष्य है।

पर इस पर कब्जा नहीं किया जाना चाहिए। मैं पुनः आपको बताती हूँ कि किसी को भी नेता (अगुआ) से इसे नहीं छीनना चाहिए। मैंने आप लोगों से मिल कर कार्य करने के लिए नेताओं की नियुक्ति की है। पर सदा आपका सीधा सम्बन्ध मुझ से है। अभी तक परमात्मा को मानने वाले लोगों का सीधा सम्पर्क परमात्मा से न था। पर अब आपका है। तो क्यों न आप मेरा उपयोग करें। और यदि नेता हैं तो आपको उनसे पूछना होगा। **कोई भी**

अपने हिसाब से लोगों को उपदेश देना शुरु न कर दे। हमें उपदेश पसन्द नहीं हैं। काफी उपदेश हो चुके। अन्य लोगों को उपदेश देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि आपको उपदेश देने ही हैं तो स्वयं को दीजिए, दूसरों को नहीं।

व्यक्ति को समझ लेना है कि यह एक जीवन्त प्रक्रिया है। किसी जड़ के छोर पर स्थित अणु द्वारा हम यह समझ सकते हैं। इसमें विवेक होता है और अपने पर इसका पूर्ण अधिकार होता है। इसका सीधा सम्बन्ध दैवी शक्ति से होता है। अतः स्वतः ही यह चलता है, पर वृक्ष की जड़ की तरह इसका चित्त सामूहिकता पर होता है। पर ऐसी दिशा में चलता है कि न कोई विवाद होता है न झगड़ा,, अर्थात् कोई बाधा ही नहीं होती। मान लीजिए कि यदि चट्टान सी कोई बड़ी बाधा आ जाए तो यह इसके गिर्द से निकल जाता है। वृक्ष के हित में चट्टान के कई चक्कर लगाता है।

अतः भूतकाल से आप यह जान सकते हैं कि आप कहाँ तक पहुँचे हैं। तथा भविष्य से आप जान पाते हैं कि लक्ष्य कितनी दूर है। यह समझना अति महत्वपूर्ण है क्योंकि पाश्चात्य बुद्धि में ये बातें बड़ी सुगमता से घुसती हैं। वे मुझ से सीधा सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। ऐसा न करके आप समूह (ग्रुप) बनाने लगेंगे, एक व्यक्ति उठकर कहेगा "श्री माताजी ऐसा कहती हैं"। कोई अन्य मेरे टेप आदि का उपयोग करेगा। ऐसा करने की आपको कोई आवश्यकता नहीं है। यदि वे किसी चीज़ की रचना करना चाहते हैं तो सीधे मुझसे बात करें अपनी मनमानी न करें क्योंकि यह तो सहजयोग के प्रति अति अनुचित दृष्टिकोण है। अतः सर्वप्रथम हमें समझना है कि यह एक जीवन्त प्रक्रिया है। केवल आप ही इसका सारा श्रेय नहीं ले सकते। इस पर आप बनावटी बातें नहीं थोप सकते जो सहजयोग की बढ़ोतरी में बाधक हों। आप इसे किसी विशेष नमूने में नहीं परिवर्तित कर सकते। यह स्वयं ही परिवर्तित होता है तथा कार्य करता है।

अतः सहजयोग में पुरोहित तन्त्र के लिए कोई स्थान नहीं है, कभी नहीं। ये धर्माधिकारी अन्ततः आपमें और मुझमें दीवार बन जाते हैं। सभी नेताओं को बता दिया गया है कि कोई भी पत्र या वस्तु आपको मिले तो वह मुझे भेज दें। मैं स्वयं उसे देखना चाहूँगी। कभी–कभी वे ऐसा करते हैं, पर आस्ट्रेलिया में कुछ नेताओं का मुझे बहुत बुरा अनुभव है। पर अब यहाँ पर आपका नेता एक अत्यन्त बुद्धिमान एवं विवेकशील व्यक्ति है। मेरे विचार में उसमें कोई कमी नहीं। केवल एक बात है कि कभी–कभी वह लोगों से कुछ अधिक ही कोमल होता है। दो स्त्रियों के कारण कल मुझे परेशान होना पड़ा। इसका कारण केवल एक था कि उसने उन्हें यह नहीं बताया कि वे कितनी भयानक थीं। अतः मुझे उनकी बकवास झेलनी पड़ी। एक नेता

यदि अधिक नरम है तो लोग उसके सिर चढ़ जाएंगे तथा यदि वह सख्त है तो उसके पीछे पड़ जाएंगे।

महसूस करने की बात केवल यह है कि सारी ही जीवन्त प्रक्रिया है और किसी एक व्यक्ति को माध्यम बनाकर माँ इस कार्य को अधिक सहज ढंग से कर रही हैं। मान लीजिए कि हर व्यक्ति छोटी–छोटी चीज़ के लिए मुझे लिखे तो बड़ा कठिन होगा। व्यर्थ की चीजों के लिए मुझे लिखने का कोई लाभ नहीं।

दूसरी बात पतियों या पत्नियों की है। आप ऐसी फिल्में या दूरदर्शन न देखें जिनमें पति–पत्नि को झगड़ते दिखाया हो। ऐसा करने पर तोते की तरह, आप कुछ कठोर शब्द सीख लेंगे तथा पति–पत्नि से वैसा ही व्यवहार करेंगे।

बहुत से प्रश्न सुगमता से सुलझाए जा सकते थे। मेरे विचार में विवाह का निर्वाह करना जितना स्त्रियों का कार्य है उतना पुरुषों का नहीं। प्रायः पुरुष विवाह नहीं करना चाहते। चाहे उनकी कोई जिम्मेवारी नहीं–बच्चे पैदा करने इत्यादि की। फिर भी वे विवाह नहीं करना चाहते। वे थोड़ा सा डरते हैं – विशेषकर पश्चिमी देशों में– भारत में नहीं। भारत में लोग विवाह करना चाहते हैं क्योंकि उन्हें प्रेम करने वाला, सामने न बोलने वाला, नम्र तथा उनकी बात को सुनने वाला, कोई साथी मिलेगा। पर पश्चिम में मैंने देखा है कि पुरुष विवाह ही नहीं करना चाहते। एक व्यक्ति से मैंने विवाह करने को कहा तो वह तीन दिन तक ओझल ही हो गया।

आपको विवाह करने होंगे। पर मैं आपको बता दूं कि इन विवाह सम्बन्धी समस्याओं का कारण स्त्रियों का समझौता न कर पाना है। पहली बात यह है कि आपको अपने पतियों को बहुत प्रेम करना होगा ताकि वास्तव में हर चीज़ के लिए वे आप के आश्रित हो जाएं। फिर वे क्या करेंगे? ऐसा आपको प्रेमपूर्वक करना है, कष्टदायी ढंग से नहीं। किसी चीज़ की मांग मत कीजिए, कुछ आशा मत कीजिए। मात्र स्नेहमय और करुण बनकर अपना प्रेम प्रकट कीजिए। तब उन्हें आदत पड़ जाती है। इसके बिना वे रह नहीं पाते। ये सब युक्तियाँ तो आपके माता–पिता को बतानी चाहिएं थीं। शायद वे भी आपसे ही रहे हों। तो आपको व्यवहार की युक्तियाँ नहीं पता। विवाह के बाद हमें कहना चाहिए 'हम'। 'मैं' नहीं कहना चाहिए। और समझना चाहिए कि पुरुष स्त्रियों से भिन्न होते हैं। आप (स्त्रियाँ) समाज की सुरक्षा करती हैं और पुरुष उसका सृजन। आपमें कहीं अधिक धैर्य एवं करुणा होनी चाहिए। निःसन्देह यह गुण आपमें है। अपने स्त्री–सुलभ गुणों को अपनाइए, आप आश्चर्यचकित होंगी कि आप पुरुषों के लिए शक्ति बन गई हैं। आप ही पुरुषों की शक्ति हैं। इसी कारण पुरुषों को आपका सम्मान करना चाहिए। **यदि पुरुष स्त्रियों का सम्मान नहीं करते तो उन्हें हर प्रकार के**

कष्ट होते हैं– विशेष तौर पर भौतिक, वैभव तथा मान सम्बन्धी कष्ट। कुछ स्त्रियाँ अत्यन्त अधिक अपेक्षा तथा आशा करती हैं। शायद रोमियो–जूलियट सम रोमांचकारी फिल्में देखने का प्रभाव हो। पर उन्हें समझना चाहिए कि शेक्सपीयर तो अवधूत थे। वे इस तरह के जीवन की सारहीनता पर प्रकाश डालना चाहते थे। रोमियो–जूलियट, दोनों की मृत्यु हो गई। एक दूसरे की सहचारिता का आनन्द वे न ले सके।

इंग्लैंड में भी हमारे सामने बहुत सी समस्याएं थीं। मुझे पता चला कि विवाह से पूर्व ही रोमांस की पुस्तकें वे पढ़ते हैं–विवाह से पूर्व और विवाह के बाद झगड़ा। तो विवाह की आवश्यकता ही क्या है?

जब मैं कहती हूँ पुरुष ही परिवार का मुखिया है तो इसका अभिप्राय यह नहीं कि पुरुष, स्त्रियों पर रोब जमाने लगें। मान लीजिए कि मैं कहूँ कि अमुक व्यक्ति आपका नेता है तो मेरा मतलब यह नहीं होता कि वह आप पर प्रभुत्व जमाए। यदि मस्तिष्क शरीर पर प्रभुत्व जमाने लगे तो शरीर का क्या होगा ? इस तरह के परिणाम निकालना मूर्खता है। पर आप परिवार के हृदय हैं। मस्तिष्क की मृत्यु पहले हो सकती है पर हृदय तो अन्त में ही मृत होता है।

अतः समझने का प्रयत्न कीजिए कि दिल और दिमाग में पूर्ण एकाकारिता होनी चाहिए। बच्चे सहजयोग समाज का चित्त हैं। तो यहाँ पर जब मैं किसी को सिर कहती हूँ तो सिर किस प्रकार हृदय पर रोब जमा सकता है ? यह नहीं हो सकता। तो लोग यहाँ वहाँ से मेरे कुछ शब्द ले लेते हैं तथा सहजयोग में अपनी दुर्बलताओं को न्याय संगत ठहराने के लिए इनका प्रयोग करते हैं। पर इस तरह का पलायन आपकी उन्नति में सहायक न होगा। आप अपने की विरुद्ध चल रहे हैं। यह आपके हित में नहीं।

मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि यदि आप इन घिसे पिटे विचारों को सहजयोग में स्वीकार करेंगे तो आपका पतन होगा, आप सड़ जाएंगे। हम नए और ताजा हैं। हम जीवित हैं। स्त्री–पुरुषों के बारे इस प्रकार के विचार हम स्वीकार नहीं करते। पुरुष ही परिवार का मुखिया कहने से मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि आप अपनी पत्नी पर रोब जमाएं या उसे तंग करें। न ही इसका अर्थ यह है कि नेता रोब जमाए। उन्हें अपने विवेक, प्रेम, करुणा के उपयोग से लोगों का उचित प्रकार मार्ग–दर्शन करना चाहिए।

मुझे एक हास्यास्पद पत्र मिला जिससे पता चला कि किसी नेता की पत्नी ने सहजयोगियों को घर तथा कार्यक्रमों पर आने से रोका क्योंकि 'मैं' उनके घर नहीं जा पाई। क्या आप ऐसा सोच सकते हैं ? यह मूर्खता है। वह नहीं जानती कि ऐसा करने से सहजयोग में उसका कितना पतन हो

रहा है। **मैं जहाँ चाहूँ जा सकती हूँ।** पर उसे दोष अपने पर लेना चाहिए था। **यह 'मेरा' घर है, ऐसा कहना मूर्खता की पराकाष्ठा है। माँ को मेरे घर आना चाहिए। भारतीय विशेषकर ऐसा कहते हैं। श्री माताजी कृपया मेरे घर आइए और मेरे साथ खाना खाइए। आप हैं कौन ? आप एक सहजयोगी हैं। तो आपका घर मेरा है, आप मेरे हैं, सभी कुछ मेरा है। आपके घर आने में क्या है ? क्या आप अलग हैं ? आपके सभी घर मेरे हैं। मैं यदि जाती हूँ तो भी इसका अर्थ यह नहीं कि मैं आपको किसी अन्य व्यक्ति से अधिक प्रेम करती हूँ।**

किसी के घर जाना अब मेरे लिए समस्या बन रही है। क्योंकि जिसके यहाँ मैं जाती हूँ उस व्यक्ति को अहंकार हो जाता है कि श्री माताजी मेरे घर आईं थीं। अतः फिर कभी आप न कहें कि श्री माताजी यह मेरा घर है। श्री माताजी यह आपका घर है। मैं वहाँ जाऊं तो भी ठीक, न जाऊं तो भी ठीक। इससे क्या फर्क पड़ता है ?

मैं तुम्हें एक बार फिर से कहती हूँ कि **बिना नेता से सम्पर्क किए और बिना उसकी जाँच के कम्प्यूटर के माध्यम से कोई बात नहीं फैलानी। ऐसा करना मुझे कठिनाई में डाल सकता है और मुझे जेल भी भिजवा सकता है।** आप समझते क्यों नहीं ? आपकी जो इच्छा करती है लिख देते हैं। इस प्रकार का गैर जिम्मेदारी भरा आचरण मेरी समझ में नहीं आता। मैंने जो कभी नहीं कही वे बातें भी कही जाती हैं। इससे अपरिपक्वता तथा उतावली झलकती है। ऐसी बातों को पूछा जाना चाहिए। अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग कीजिए। अपने नेता से सम्पर्क करना अत्यन्त आवश्यक है। छपने वाली तथा वितरित होने वाली चीजें तो नेता द्वारा देखी जानी चाहिएं। इसमें कोई जल्दबाजी नहीं है। लिखी हुई कोई पुस्तक,टेप आदि सब नेता की आज्ञा तथा सूझ–बूझ से ही निकलने चाहिएं। मैं कहूँगी कि नेता अवश्य उन कागजात पर हस्ताक्षर करें। तब मैं उसे उत्तरदायी ठहराऊंगी। परन्तु निरंकुशतापूर्वक यदि आप कार्य करेंगे तो परिणाम भयानक हो सकते हैं।

छोटी–छोटी चीजें भी मैं आपको बताऊंगी ? मुझ से मैलबॉर्न में विश्व निर्मल धर्म शुरु करने को पूछा गया। मैंने कहा ठीक है। मैं नहीं जानती थी यह एक एसोसिएशन होगी, जिसके चुनाव होंगे। विश्व निर्मला धर्म तो हर जगह है पर कोई एसोसिएशन आदि नहीं। एक प्रकार का समाज विश्व निर्मला धर्म का प्रचार कर रहा है। इसकी कोई संस्था नहीं है। हमें कोई चुनाव नहीं चाहिए। यदि कुछ गलत लोग घुस गए तो सहजयोग को पूरी तरह निकाल देंगे। अतः आप केवल न्यास (ट्रस्ट) बना सकते हैं। यदि आप कुछ और कहना चाहते हैं तो अलग से करें यह विश्व निर्मला धर्म या सहजयोग के नाम

पर नहीं होना चाहिए। मेरे हाँ कहने का अर्थ यह नहीं कि आप एसोसिएशन आदि कुछ भी बना लें। अब तक जो गलती हुई है उसे ठीक करें। इन्हें कम किया जाए। केवल उन्हीं लोगों को चुना जाए जो सहजयोग में बहुत अच्छे हैं और जो अभी तक विवेक पूर्वक तथा सीधे–सच्चे ढंग से कार्य कर रहे हैं।

एक और सलाह दी गई थी कि हम अपना प्रक्षेपण बाहर की दुनिया के सम्मुख करें। यदि इसका अर्थ यह है कि हम दूसरी संस्थाओं तक जाएं तो यह गलत है। ये सारी संस्थाएं मृत हैं। ये जीवन्त संस्थाएं नहीं हैं। परन्तु यदि ये हमारे पास आना चाहें तो ठीक है। हमें अपना सिर फोड़ने के लिए उनके पास नहीं जाना चाहिए। वहाँ जाकर न केवल विरोधियों में फंसेंगे बल्कि उनसे आप नकारात्मकता भी लेंगे। समझने का प्रयत्न करें। हमें अति सावधान रहना है। आप केवल ऐसे सहजयोगी ले सकते हैं जो जिज्ञासु हैं, ईमानदार हैं, नम्र हैं और जिन्हें सहजयोग में धन तथा सत्ता की आवश्यकता न हो।

आस्ट्रेलिया से दो व्यक्ति आए थे और अब देखिए कितने सारे हैं। **निःसन्देह सहजयोग बढ़ेगा, पर इसे आयोजित मत कीजिए। आयोजन शुरू करते ही बढ़ोतरी रुक जाएगी।** जैसे आपने देखा होगा कि काटकर सुव्यवस्थित (आयोजित) करने से पेड़ छोटा हो जाता है (बौना)। मैंने ऐसा कोई वृक्ष नहीं देखा जो आयोजन से बढ़ता हो। ज्यादा से ज्यादा आप इसका पोषण कर सकते हैं, पानी दे सकते हैं। पर आप इसके विकास की गति नहीं बढ़ा सकते।

सभी संस्थाएं विकास की गति को कम करती हैं। आरम्भ में चाहे यह प्रतीत हो कि आयोजित करने से गति बढ़ गई है। इसाई, मुस्लिम, बौद्ध और हिन्दु आदि धर्म भी आयोजन के बाद बनावटी रूप से बढ़े और खोखले से हो गए। हमें ठोस व्यक्तियों तथा ठोस एवं अन्तर्जात धर्म की आवश्यकता है। इन बनावटी चीज़ों को हमने नहीं अपनाना। आजकल हम बहुत सी बनावटी खाद उपयोग कर रहे हैं। लोगों को समझ आने लगी है कि यह हमारे लिए हानिकारक है। अतः सहजयोग को स्वाभाविक ढंग से, बिना बनावटी संस्थाएं बनाए, परमात्मा की कृपा से कार्य करने दीजिए। बनावट तो पतन ही लाती है।

अब आपके बच्चों के बारे में। मैं पश्चिमी बच्चों के स्वभाव का अध्ययन करती रही हूँ। उनका चित्त कभी ठीक चीज़ों पर नहीं होता। पढ़ाई पर तो बिल्कुल नहीं होता। खाने पर उनका चित्त होता है।

पश्चिमी देशों के लोगों को भारत में दस्त हो जाते हैं। आप न गर्मी सहन कर सकते हैं न सर्दी। आप अन्तर्दर्शन करें। थोड़ा सा काम करने से आप

थक जाते हैं। क्या कारण है ? कारण यह है कि आप सोचते बहुत अधिक हैं। ऐसा ही आप विवाह होने पर करते हैं। आप सोचने लगते हैं कि मेरी प्राथमिकताएं क्या हैं, मैं क्या करूं, विश्लेषण करने लगते हैं। जो भी करना है कर डालिए। बहुत अधिक सोचना आपको रोगों के प्रति दुर्बल बनाता है। मूलाधार चक्र, निःसन्देह , अति महत्वपूर्ण है। यदि मूलाधार दुर्बल है तो आप पकड़ जाते हैं। आपको कोई रोग हो सकता है। पश्चिम में तो गुप्त रोग भी बहुत आम हैं। पर भारत में शक्तिशाली मूलाधार के कारण ऐसा नहीं है। अतः अब पहली समस्या यह है कि अपने मूलाधार को किस प्रकार दृढ़ करें ?

दूसरे जो खाना आप खाते हैं वह ताजा नहीं होता। ताजा खाना खाने का प्रयत्न कीजिए। आस्ट्रेलिया में तो आपको ताजा खाना उपलब्ध हो सकता है। जहाँ तक हो सके कार्बोहाइड्रेट अधिक लीजिए। पतले होने की अधिक चिन्ता न कीजिए। थोड़े से मोटे व्यक्ति लहरियों को अच्छी तरह सोखते हैं। क्या आप जानते हैं कि चैतन्य लहरियाँ चर्बी पर बैठती हैं। इस तरह वे स्नायुतंत्र में जाती हैं क्योंकि आपके स्नायु चर्बी से बने हैं और आपका मस्तिष्क भी चर्बी से बना है।

आपके मस्तिष्क में जो भरा जाता है आप उसे स्वीकार कर लेते हैं। यही कारण है कि उद्यमियों ने आपको वश में कर लिया है। विवेकहीनता के कारण हम यह समझ नहीं पाते। उन्होंने आपको सिर में तेल लगाने से रोका और आप रुक गए। परिणामतः आप गंजे हो जाते हैं। वे विग बेच सकते हैं। बालों को ठीक से बढ़ने के लिए पोषण चाहिए। इन्हें भूखा क्यों मारते हैं ? आप अपने शरीर की भी मालिश कीजिए। सिर की मालिश कीजिए। अपनी देखभाल कीजिए। बिना तेल के बिखरे बाल तो भूतों को बुलावा देना है। आप साक्षात्कारी लोग हैं, लहरियाँ आप से बह रही हैं, अपने सिर की अच्छी तरह मालिश कीजिए। शनिवार को एक घंटा लगाइए। यह शनि का दिन है, कृष्ण का दिन है। उन्हें मक्खन–तेल बहुत पसन्द है। छोटी–छोटी बातों को समझ जाना चाहिए।

मैं समझ सकती हूँ कि आपको धूप बहुत पसन्द है। पर आस्ट्रेलिया में तो बहुत धूप है फिर भी न जाने क्यों यह आपको पसन्द है। फैशन के कारण आप बिगड़ते हैं। आपकी चमड़ी में चमक नहीं आ सकती। उपचार के रूप में आप सूर्य स्नान कर सकते हैं। भारतीय लोग अंग्रेजों के इस तरह के अवांछित सूर्य–स्नान पर हैरान होते थे।

व्यक्तिगत शुद्धि का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। बहुत से पानी का उपयोग कर हाथ धोइए। पाखाना जाने पर हर बार पानी इस्तेमाल कीजिए। ऐसा न करने पर आपका मूलाधार कभी ठीक न होगा। आपके बच्चे अपने दाँत भी नहीं

साफ करना चाहते। दाँत साफ करने या स्नान करने को यदि उनसे कहें तो वे रोने लगते हैं। भारत की चिलचिलाती गर्मी में भी वे स्नान नहीं करना चाहते। उनसे दुर्गन्ध आती है। पर यदि आप उनसे कहें तो वे कहते हैं "हमारे माता–पिता से भी ऐसी ही गंध आती है"। उनके मुँह से भी दुर्गन्ध आती है। भारत में तो हमें सुबह–शाम दाँत साफ करने चाहिएं। यह अति आवश्यक है। भारतीय संस्कृति ने ये सब बातें हमें बहुत पहले से सिखाई थीं। इन सब कामों के लिए किसी को कहना नहीं पड़ता। खेल–खेल में ही बच्चों को हम यह सब सिखा देते हैं। सफाई, स्नान आदि आपके तथा आपके बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

व्यक्तिगत सफाई आप लोगों की बहुत कम है। घर तो आपके पूरी तरह साफ होंगे। कालीन पर यदि कुछ गिर जाए जो आप इसे तुरन्त साफ करेंगे क्योंकि आपने इसे बेचना है। बेचने योग्य हर चीज़ की आप देखभाल करते हैं। अन्य चीज़ों की नहीं। सहजयोग में हमें समझना चाहिए कि हमारी कोई भी वस्तु बिकाऊ नहीं है। हमारे पास जो भी कुछ है इसे हम स्वयं रखेंगे, अपने बच्चों को देंगे या दूसरे लोगों को भेंट कर देंगे। कोई चीज़ बेचेंगे नहीं। आपके बच्चे भी अपने शरीर की सफाई से अधिक ध्यान बिकने योग्य वस्तुओं का रखते हैं। हमें अपने विचार बदलने होंगे और कहना होगा कि हम अपनी किसी भी वस्तु को बेचेंगे नहीं।

कभी आपको अपना घर बेचना भी पड़ता है। तो हर हाल में एक ही दाम मिलेंगे चाहे आप इसे सजाइए या नहीं। लोग तो अनसजे घर खरीदना पसन्द करते हैं।

तो यही भौतिकवाद है कि हम बेचने के लिए चीज़ें खरीदने का प्रयत्न करते हैं। इसके विपरीत हमें चाहिए कि हस्तकला की सुन्दर–सुन्दर वस्तुएं खोजें, इनमें से कुछ खरीदें तथा ये अपने बच्चों को तथा उनकी सन्तानों को दी जाएं।

मेरे कार्यक्रम में बच्चे के रोने का कारण जरूर खोजें। अवश्य ही कोई परेशानी या बाधा होगी। **यदि बच्चा मेरी उपस्थिति में रोता है या डरता है तो कोई बाधा अवश्य है।** आप इस बाधा को दूर करें। तो अब हमें अपने प्रति दृष्टिकोण बदलना होगा। हम आशीर्वादित लोग हैं। हमें अपने शरीर, अपने बच्चों तथा भौतिकता से अधिक महत्वशील वस्तुओं की देखभाल करनी होगी। यह आत्मा है।

तो आखिरकार हम इस परिणाम तक पहुँचते है कि जिस आत्मा ने हमें यह सारा सौन्दर्य, सुन्दर चाँदनी, हमारे कार्यों के लिए सुन्दर धूप प्रदान की है तथा हमें इतना मधुर बनाया है, उसकी सन्तुष्टि के लिए और उसका आनन्द लेने के लिए हमने क्या किया। अतः आत्मा ही हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। हमें आत्म–आनन्द खोजना चाहिए। जितना अधिक आप आत्मा के विषय में सोचेंगे

उतना ही अधिक गहनता में उतरेंगे। अत्यन्त गहन आनन्द आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता में स्थापित हो, सामूहिकता का आनन्द लेते हुए, अति सुन्दर रूप से आप स्थिर हो जाएंगे।

सामान्य बातों में– कोई भी विशेष कार्य करने से पहले अपने नेताओं से आज्ञा लीजिए। इसके बाद आपकी अपनी समझदारी है। अन्त में– सभी नेताओं को शिकायत है कि सहजयोग के लिए कोई भी धन नहीं देना चाहता। अब आप देखिए कि जो पैसा आप पूजा के लिए देते हैं उसकी तो मैं आपके लिए चाँदी खरीद लेती हूँ। आपको यूरोपियन लोगों के बराबर चाँदी दे दी जाती है जबकि आपका पैसा उनसे कम होता है। पहले वे पूजा के लिए एक डॉलर दिया करते थे जो सिक्कों के रूप में होता था और जिसे मैं वापिस ले आती थी। मैं इसका उपयोग अपने लिए नहीं करती, मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है। यद्यपि ये मुझे दिया जाता है और सामान्यतः मुझे इसका उपयोग करना चाहिए। पर मैंने सोचा कि इसे खर्चने के स्थान पर आपको चाँदी दे दूं क्योंकि चाँदी के बर्तन पूजा के लिए अति आवश्यक हैं और अति शुभ हैं। पर लोग बड़ी हिचकिचाहट पूर्वक पैसा देते हैं। मैं जानती हूँ कि आपको पैसे की कठिनाई है। पर इस कठिनाई का एक कारण यह भी हो सकता है कि पूरे विश्व में आप सबसे कम पैसा सहजयोग के लिए देते हैं। इतना कम और कोई भी नहीं देता। भारत में कम से कम 21 रु. और 11रु. देते हैं। तो जो भी कुछ आप इकट्ठा करेंगे, मैं कुछ नहीं कहूँगी और चाँदी आपको दे दूँगी। आप इतने सारे लोग हैं। मुझे ऐसा करना पड़ता है, आपको तथा यूरोप को अधिकतर पैसा देना पड़ता है। आप भी यूरोप की तरह ही एक महाद्वीप हैं।

परन्तु व्यक्ति को समझना चाहिए कि उसे सहजयोग के लिए कुछ करने के बारे में सोचना चाहिए। हम सहजयोग के लिए क्या कर सकते हैं ? आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैंने अपने पति का बहुत सा धन खर्च कर दिया है। मैं आस्ट्रेलिया में एक बार फिर कुछ करने वाली हूँ जो यहाँ के लोगों के लिए बहुत हितकर होगा। इसके लिए मैं अपना पैसा भी लगा सकती हूँ। इसके बावजूद भी लोग नहीं समझते कि मेरे पति मुझे यह सब करने की आज्ञा क्यों देते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि इस प्रकार उन्हें पूरे आशीर्वाद मिलते हैं। उन्होंने सहजयोगियों को बताया है कि सहजयोग के कारण ही मुझे ये सब इनाम मिले हैं। परन्तु वे (श्री माताजी) तो परमात्मा के लिए कार्य कर रही हैं। मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि आपने बहुत सा धन दिया। यह उदारता है। पर **यदि आप सहजयोग के लिए धन देते हैं तो किसी अन्य रास्ते से आपको धन मिल जाता है।** अपने व्यक्तिगत उपयोग के लिए मुझे पैसा नहीं चाहिए।

यह आपकी उदारता का द्योतक है। सभी नेताओं की यह सामान्य बात है। मैलबॉर्न का नेता कहता है कि कोई पैसा नहीं देना चाहता। वे केवल सहजयोग से लाभ उठाना चाहते हैं। लक्ष्मी जी के दृष्टिकोण से यह ठीक बात नहीं है।

व्यक्ति को यह भी समझना है कि एक बार सहजयोग में आने के बाद, चाहे आप कुछ सहजयोग के लिए खर्चते हैं या नहीं, आप स्वयं को सहजयोग की जिम्मेवारी समझने लगते हैं। यह अति अनुचित है। हर छोटी–छोटी बात में उन्हें सहायता चाहिए। निःसन्देह उनकी सहायता होनी चाहिए। जिनके पास धन नहीं है हम उनकी सहायता करने का प्रयत्न करते हैं। पर वे एक प्रकार के बोझ बन जाते हैं और अन्य सहजयोगियों तथा मुझ से भी वे बहुत अधिक आशा करते हैं। किसी का विवाह कर दो तो वह सिरदर्द बन जाता है, पत्र पर पत्र, टेलिफोन पर टेलिफोन उचित नहीं। यदि कोई बच्चा बीमार है तो बेशक आप मुझे सूचित करें। पर क्रोधी और दुर्व्यवहार करने वाला बच्चा मेरे लिए सिरदर्द है। हो सकता है आप क्रुद्ध स्वभाव हों और पति–पत्नि परस्पर झगड़ते हों। तो इस दोष को आप क्यों नहीं दूर करते ?

वे चाहते हैं कि उनका हर छोटा–छोटा कार्य भी सहजयोग करे। व्यक्ति को समझना चाहिए कि **सहजयोग आपकी जिम्मेवारी है, आप सहजयोग की जिम्मेवारी नहीं हैं**। यह सर्वोत्तम दृष्टिकोण है। निःसन्देह एक प्रकार आप सहजयोग की जिम्मेवारी हैं। पर दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए ? अब आप काफी परिपक्व हैं। बेटा जब खड़ा होकर परिपक्व जो जाता है तो वह माता–पिता की देखभाल करता है, इसी प्रकार आपको सहजयोग की देखभाल करनी चाहिए, न कि सहजयोग आपकी देखभाल करे और आप सदा सहजयोगियों को परेशान करते रहें।

अच्छी तरह समझ लीजिए कि आपके लिए सहजयोग उत्तरदायी नहीं है। आप सहजयोग के लिए उत्तरदायी हैं। सहजयोग ने आपको इतना कुछ दिया है। आपने परमात्मा के लिए क्या किया है, सदा इस प्रकार सोचें। यदि आप इस प्रकार सोचने लगेंगे तो जितना अधिक कार्य आप सहजयोग के लिए करेंगे उचित, जीवन्त और सन्तुलित ढंग से जितना अधिक आप सहजयोग के लिए अपनी बुद्धि लगाएंगे, उतना ही अधिक आपकी सहायता होगी, उतने ही अधिक आप बढ़ेंगे और उतना ही अधिक आनन्द आप लेंगे। आज का प्रवचन आप सब के लिए है क्योंकि मैं नहीं जानती की किस पर क्या लागू होता है। दूसरों के लिए हम इस बात को न समझें अपने लिए जाने कि हम सहजयोग पर बोझ न बन कर सहजयोग का सहारा होंगे। हमें सहजयोग की देखभाल करनी है। यह अति सुन्दर दृष्टिकोण है।

मुझे (श्री माताजी को)सहजयोग की आवश्यकता नहीं है। पर मैं सहजयोग तथा सहजयोगियों के लिए चिन्तित हूँ। मेरे लिए भी वे सभी मेरी जिम्मेवारी हैं। मुझे उनकी देखभाल करनी है, उनकी चिन्ता करनी है। मुझे उनकी बात सुननी है। मुझे उनके पत्र आदि मिलते हैं। मेरा अभिप्राय है कि इस तरह का कार्य यदि किसी को करना पड़े तो कोई इसे स्वीकार न करेगा। हर हाल में मुझे सहारा देना है। क्योंकि मेरी आत्मा सन्तुष्ट होती है। यह सन्तुष्टि के लिए है, मेरी अपनी सन्तुष्टि के लिए। यह स्वार्थ है। जब आप उस आत्मत्व तक पहुँच जाएंगे तो समझ सकेंगे कि आत्मा की आवश्यकता क्या है। तब इस पर अपनी बुद्धि लगाएंगे। आप हैरान होंगे कि दूसरों के लिए जब आप कुछ करने लगेंगे तो यह सहजयोग के लिए अति लाभकारी होगा। एक प्रार्थना की तरह। सभी कुछ प्रार्थना है। सहजयोग में जो भी कुछ आप सहजयोग के लिए करते हैं यह एक प्रार्थना है, परमात्मा से घनिष्टता है, परमात्मा से एकाकारिता है। इसे हम पूजा भी कह सकते हैं। एक बार जब आप ऐसा करने लगेंगे तो आप चिन्ता करनी छोड़ देंगे कि कौन आपकी आलोचना करता है, लोग आपको क्या कहते हैं आदि। पर सुन्दर सम्बन्धों तथा सूझ–बूझ का अनुभव आप करेंगे।

मुझे विश्वास है कि निश्चित ही यह शिव पूजा बहुत ही ऊँचे स्तर पर आपको स्थापित करेगी और स्थापित होने पर आप इसे जान सकेंगे। यहाँ हमारा सम्पर्क सीधे अपनी आत्मा से है। हम आत्मा के विषय में जानते हैं तथा उसके प्रति कृतज्ञ हैं। आत्मा ने जो हमारे लिए किया उसके लिए हम इसका सम्मान करते हैं। इस तरह से मैंने (श्री माताजी ने) परिवर्तन देखा है। एक महान ऊँचाई को अचानक ही आप पा लेते हैं। मुझे विश्वास है कि आस्ट्रेलिया के लोगों के साथ भी ऐसा ही घटित होगा। अपने क्षुद्र भेदभावों को भूल जाइए। धन एवं सत्ता के लिए लड़ना मूर्खता है। ठीक होने का प्रयत्न कीजिए। मैलबोर्न में इसी मूर्खता के कारण कुछ लोग पकड़ जाते हैं। उन्हें चाहिए कि स्वयं को साफ करें, ठीक करें तथा अपनी देखभाल करें। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

(39)
39

लोगों को प्रभावित कैसे करें ?

श्री माता जी निर्मला देवी का प्रवचन

हेग, हॉलैंड, 17 सितम्बर,1986

दूसरों को प्रभावित करने के लिए हमें जानना है कि हमारा स्वयं पर कितना अनुशासन है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उदाहरण के रूप में अस्तित्वहीन लोग यदि दूसरों को प्रमाणित करने का प्रयास करें तो मज़ाक बन जाते हैं। जब तक आपकी अपनी कोई पहचान नहीं है, आपसे कोई प्रभावित नहीं होगा। अतः बाह्य व्यक्तित्व से पहले आन्तरिक व्यक्तित्व का विकसित होना आवश्यक है। लोगों से बातचीत करते हुए या बातचीत करने की आपकी अपनी एक सुन्दर शैली का होना आवश्यक है। आपकी चाल भी सधी हुई होनी चाहिए। शिथिलता से टांगो को इधर–उधर फेंकते हुए न चलकर सीधे चलें और सीधे ही बैठें। लोगों को आपके आत्मविश्वास का पता चले। आत्मविश्वासहीन आचरण दूसरों को प्रभावित नहीं कर सकता।

आपके आचरण जैसे बातचीत, चाल–ढाल, बैठने तथा संवाद के ढंग से आपका आत्मविश्वास छलकना चाहिए। आत्मविश्वास की एक झलक होनी चाहिए। परन्तु पूर्ण तथा सुरक्षित महसूस करने पर ही आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। सहजयोग में यदि आपके मध्य हृदय में असुरक्षा की भावना है तो स्वयं को आश्वस्त कीजिए कि 'श्री माता जी मेरे साथ हैं, मेरी सहायता कर रही हैं और मैं माँ के साथ हूँ, मुझे किसी की चिन्ता नहीं है।' तब आपका मध्य हृदय ठीक होगा। निःसन्देह आप यह सब दूसरों को नहीं बतला सकते फिर भी यदि आपमें व्यक्तित्व है तो आप इसे सहज ही दूसरों में भर सकते हैं। परन्तु आत्मविश्वासहीन आप यह कार्य नहीं कर सकते। अतः सर्वप्रथम आपको अपने अन्दर आत्मविश्वास स्थापित करना है। सहजयोगियों के लिए यह कहना अति सुगम है कि ' मैं आत्मा हूँ, मैं अबोध हूँ और मुझे स्वयं आदिशक्ति ने चुना है।' अतः आपके अन्दर जबरदस्त आत्मविश्वास होना चाहिए।

जब कोई व्यक्ति आपके पास आया, तो उसे देव–सम मान, उससे बहुत ही मधुरता से बातचीत करें। मेरे सम आत्मा उसमें भी तो है। अतः आप उसे अच्छा स्थान बैठने को दें, ध्यान रखें कि वह आराम से है, उससे चाय आदि पूछें। उसे आभास करायें कि उसके आने से आप अशान्त या परेशान नहीं प्रसन्न हुए हैं। अतः आप भी प्रेम से उसके साथ बैठिए। आत्मविश्वास की कमी के कारण कभी–कभी आप किसी व्यक्ति विशेष से घबरा जाते हैं। यह घबराहट आपके अन्दर छिपी असुरक्षा की भावना के कारण होती है। किसी से

बात करते समय घबराइए नहीं। आपको इस प्रकार बात करनी चाहिए कि दूसरा व्यक्ति आश्वस्त होकर आपको बहुत ही भला व्यक्ति समझे।

दूसरों को बात करने का अवसर देना एक और तरीका है। दूसरों को ध्यान से सुनिए, स्वयं ही न बोलते जाइए। जब वह कह चुकें तो कहिए 'निःसन्देह यह सच है, मैं आपसे आश्वस्त हूँ, परन्तु .....तब अपनी बात शुरु कीजिए। 'नहीं बिल्कुल नहीं' कहकर दूसरों पर आघात मत पहुँचाइए। इसके विपरीत आप देखिए कि ये क्या कहते हैं। आप मुझे देख सकते हैं। मैं भी बहुत बार ऐसा करती हूँ। जब कोई व्यक्ति कुछ कहता है तो 'हाँ यह सच है परन्तु यह इस प्रकार है ....' तो उन्हें बुरा नहीं लगता। वे सोचते हैं कि आपने विषय का दूसरा पक्ष भी देखा है, कि आप संतुलित हैं और अपने विचारों से केवल प्रभावित करने का प्रयत्न ही नहीं करते। आप ऐसा कर भी रहे हों तो भी दूसरे व्यक्ति में इसका आभास नहीं होना चाहिए।

वेशभूषा: वेशभूषा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। यदि आप किसी अधिकारी के साथ कार्यरत हैं तो आपका वेश उसके उपयुक्त होना चाहिए, जिससे आप चुस्त प्रतीत हों।

अपने संगठन के विषय में बात करते हुए 'मैं' का प्रयोग न कर 'हम' कहकर बात कीजिए। सदा संगठन की बात कीजिए अपनी नहीं। 'मैं ऐसा कार्य नहीं करूंगा, मैं घृणा करता हूँ, मेरा विश्वास है' यह कहना अत्यन्त बेतुका है। हमें क्या करना है, हमें विश्वास है, हम ऐसा सोचते हैं। आपकी क्या राय है आदि। या आप अपने संगठन, उत्पादन या किसी अन्य चीज के विषय में जो बताना चाहें। आपको कहना है ' आप देखिए यह उपलब्ध है और हमने देखा है कि इससे बहुत लाभ हुआ है और यह इस प्रकार कार्य करता है। हमने इसकी बहुत प्रशंसा सुनी है। आप भी विवरण देख सकते हैं। यदि आप चाहें तो प्रयोग कर स्वयं जान लें।' आपको पूरी तरह तैयार होना चाहिए। अपने उत्पादन का आपको पूरा ज्ञान होना चाहिए। विवरणिका (सूचना पुस्तिका) आपके पास होनी चाहिए। 'कृपया इसे लीजिए और स्वयं देखिए'। बाजार पर छाने के लिए उत्पादन के गुणों के साथ–साथ इसे पूरा करने की शैली भी महत्वपूर्ण है।

यदि किसी की कोई समस्या हो तो बड़ी ही सहृदयता से पूछ सकते हैं कि क्या समस्या है 'यह समस्या हमारे सम्मुख है, अब आप इसका समाधान बताइए' ऐसा कहने पर वह व्यक्ति बुरा नहीं मानेगा। यदि मैं तुम्हें कोई बात साफ–साफ कह दूँ तो तुम्हें भी अच्छी नहीं लगेगी। परन्तु मैं तुम्हें सब कुछ कह देती हूँ। परन्तु सब कुछ बड़े नम्र, अनुकूल ढंग से कहती हूँ, जिसे आप आसानी से समझ और अपना लेते हैं। ठीक प्रकार का बर्ताव और ठीक प्रकार का आचरण और ऐसी शैली जिसे लोग समझ सकें, बहुत ही महत्वपूर्ण है।

वास्तव में दूसरों को प्रभावित न करने से लोग स्वयं ही प्रभावित होते हैं। कला को छिपाने में ही कला निहित है। इसके विषय में कोई भी सावधानी प्रकट नहीं होनी चाहिए। दूसरे व्यक्ति से बातचीत करते हुए

भी चाहे आपको पूरी तरह से समझ न आ रहा हो फिर भी आप ऐसा प्रकट कीजिए कि आप सब सुन और समझ रहे हैं। जब आप तीन, पाँच या दस व्यक्तियों से सम्पर्क कर रहे हों तो आपको सदा उनके बीच में उत्तम भावनाएं बनानी चाहिएं। जैसे मैं चाहूंगी कि आप शादी करें। फिर मैं आपको किसी लड़के के बारे में बताऊंगी कि वह कैसा है, और इस तरह बिना चोट पहुँचाए तुम्हें तैयार करूंगी, क्योंकि बाद में उसके विषय में पता चलेगा तो आप कहेंगे कि माँ ने पहले ऐसा नहीं बताया। अतः बड़े प्रेम से आप कहें 'उसमें यह बातें थोड़ी–थोड़ी हैं, परन्तु सब ठीक है। वह बहुत ही भला हो सकता है। वह ऐसा करने में समर्थ है' अब यह आप पर निर्भर है कि आप किस तरह से निभायेंगे। आप पूरी तरह से सूचित हैं और उस व्यक्ति के बारे में आपको पूरा ज्ञान है। अतः अब आपका उत्तरदायित्व है। मैं कुछ व्यक्तियों का प्रयोग करती हूँ, ये युक्तियां मेरे स्वभाव में हैं। परन्तु आप भी इन्हें आत्मसात कर सकते हैं ऐसा करना कठिन नहीं है। इन छोटी–छोटी बातों का बहुत प्रभाव पड़ता है।

आपको पतन की ओर नहीं बढ़ना। प्रभावित करने के लिए आपको ऊपर उठना है। परन्तु ऊपर जाते हुए आपने यह प्रकट नहीं होने देना अन्यथा ईर्ष्या उत्पन्न हो जाएगी। लोग सोचेंगे कि आप बड़े अहंकारी हैं। अतः बहुत की नम्र बनिए।

श्री माताजी के मुख से बहता हुआ चैतन्य का प्रवाह